

30 से पहले समझ लें पैसे का खेल, वरना बाद में होगी मुश्किल!

कम उम्र में अपनाएं ये नियम, बने
आर्थिक रूप से मजबूत, निवेश की सही
समय पर शुरुआत ही बनाती है अमीर

बिजनेस डेस्क

कम उम्र सपनों, करियर और नई शुरुआत का समय होती है। पहली नौकरी, पहली सैलरी और अपने फैसेल लेने की आजादी — ये सब उत्साह से भरे होते हैं। लेकिन इसी दौर में पैसे को लेकर की गई छोटी-छोटी गलतियां आगे चलकर बड़ा वित्तीय बोझ बन सकती हैं। अक्सर युवा कमाई शुरू करते ही लाइफस्टाइल अपग्रेड कर लेते हैं, लेकिन बचत और निवेश को टालते रहते हैं। नतीजा यह होता है कि 30 की उम्र पार करते-करते जिम्मेदारियां बढ़ जाती हैं, मगर मजबूत फाइनेंशियल बेस नहीं बन पाता। अगर आप 30 की उम्र से पहले कुछ बुनियादी और अक्सर वित्तीय नियम समझ लें, तो भविष्य आर्थिक रूप से सुरक्षित और तनावमुक्त बनाया जा सकता है। आइए जानते हैं ऐसे 5 जरूरी फाइनेंस रूल्स, जिन्हें हर युवा को अपनाना चाहिए।

1. 50/30/20 रूल: कमाई का सही बंटवारा

यह नियम बजट बनाने का सबसे आसान और कारगर तरीका माना जाता है। इसके अनुसार 50% आय जरूरी खर्चों पर (किराया, राशन, बिजली-पानी, बिल, इंश्योरेंस), 30% आय इच्छाओं पर (यूमना-फिरना, मूवी, शॉपिंग, गैजेट्स) और 20% आय बचत या निवेश में लगानी चाहिए। अगर शुरुआत से ही इस फॉर्मूले को अपनाया जाए, तो खर्च नियंत्रण में रहता है और निवेश की आदत भी बनती है। कई युवा पूरी सैलरी खर्च कर देते हैं और महीने के अंत में बचत शून्य रह जाती है। 50/30/20 रूल आपको अनुशासन सिखाता है और 'पहले बचत, फिर खर्च' की सोच विकसित करता है।

2. 20/4/10 कार रूल: गाड़ी का सपना

नई कार खरीदना लगभग हर युवा का सपना होता है। लेकिन कार लोन अक्सर लंबे समय तक वित्तीय दबाव बना देता है। ऐसे में 20/4/10 रूल बहुत काम आता है। कम से कम 20% डाउन पेमेंट करें, लोन की अवधि 4 साल से ज्यादा न रखें। आपकी मासिक आय का 10% से ज्यादा इंश्योरेंस और कार खर्च पर न जाए। इस नियम का मकसद यह है कि गाड़ी आपके लिए सुविधा बने, बोझ नहीं। लंबी अवधि का लोन लेने से ब्याज ज्यादा चुकाना पड़ता है और अन्य निवेश के अवसर छूट सकता है।

3. रूल ऑफ 72: कंपाउंडिंग की ताकत समझें

निवेश की दुनिया में 'कंपाउंडिंग' सबसे बड़ा हथियार है। रूल ऑफ 72 आपको यह समझाने में मदद करता है कि आपका पैसा कितने समय में दोगुना होगा। फॉर्मूला है: 72 ÷ ब्याज दर = पैसा डबल होने का समय (सालों में)। उदाहरण के लिए, अगर आपको 12% सालाना रिटर्न मिल रहा है तो 72 ÷ 12 = 6 साल यानी आपका निवेश लगभग 6 साल में दोगुना हो सकता है। यह नियम आपको जल्दी निवेश शुरू करने की प्रेरणा देता है। जितनी जल्दी शुरुआत करेंगे, कंपाउंडिंग का फायदा उतना ज्यादा मिलेगा।

4. 3-6 महीने का इमरजेंसी फंड : सुरक्षा कवच

जिंदगी अनिश्चितताओं से भरी है। अचानक नौकरी छूट जाए, मेडिकल इमरजेंसी आ जाए या कोई पारिवारिक संकट आ जाए। ऐसे समय में कर्ज लेने की नौबत न आए, इसके लिए इमरजेंसी फंड जरूरी है। आपको कम से कम 3 से 6 महीने के खर्च के बराबर रकम अलग से बचाकर रखनी चाहिए। यह रकम सेविंग अकाउंट या लिक्विड फंड जैसे सुरक्षित और आसानी से निकाले जा सकने वाले साधनों में होनी चाहिए। इमरजेंसी फंड आपको मानसिक शांति देता है और निवेश को बीच में तोड़ने से बचाता है।

5. रूल ऑफ 100: उम्र के अनुसार निवेश

निवेश में रिस्क और रिटर्न का संतुलन बेहद जरूरी है। रूल ऑफ 100 एक आसान फॉर्मूला देता है। 100 - आपकी उम्र = इक्विटी में निवेश का प्रतिशत। अगर आपकी उम्र 25 साल है। 100-25 = 75 यानी 75% निवेश शेयर बाजार या इक्विटी में और 25% सुरक्षित साधनों (FD, बॉन्ड आदि) में रखा जा सकता है। यह नियम युवाओं को ज्यादा जोखिम लेने की अनुमति देता है, क्योंकि उनके पास समय ज्यादा होता है और बाजार की गिरावट से उबरने का मौका भी।

वर्गों जरूरी हैं ये फाइनेंस रूल्स ?

- ये आपको खर्च और बचत का संतुलन सिखाते हैं
- कर्ज के जाल से बचाते हैं
- निवेश की आदत जल्दी डालते हैं
- भविष्य के बड़े लक्ष्यों (घर, शादी, रिटायरमेंट) के लिए तैयारी करवाते हैं
- आर्थिक तनाव कम करते हैं
- 30 की उम्र के बाद जिम्मेदारियां तेजी से बढ़ती हैं परिवार, बच्चों की पढ़ाई, घर का लोन, मेडिकल जरूरतें। अगर आपने 20s में मजबूत वित्तीय नींव रख ली, तो आगे का सफर आसान हो जाएगा।

आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर महिलाएं निवेश के फैसलों में बढ़ रही भागीदारी

अब 56% अब खुद ले रही फैसले
फाइनेंशियल प्लानिंग में गैप

निवेश में महिलाओं का आत्मविश्वास
और योजना बनाने में चुनौती बढ़ा

देश के 13 शहरों के 5,050 लोगों को शामिल किया गया, सर्वे
में 25 से 60 वर्ष आयु वर्ग के ऐसे प्रतिभागियों को चुना गया

बिजनेस डेस्क

भारत में महिलाओं की आर्थिक भूमिका तेजी से बदल रही है। अब महिलाएं केवल कमाई तक सीमित नहीं हैं, बल्कि निवेश से जुड़े फैसलों में भी सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं। शहरी भारत में निवेश को लेकर महिलाओं का

आत्मविश्वास लगातार बढ़ रहा है और बड़ी संख्या में महिलाएं अब अपने निवेश निर्णय खुद लेने लगी हैं। हालांकि निवेश में बढ़ती भागीदारी के बावजूद मजबूत और व्यवस्थित वित्तीय योजना के मामले में अभी भी बड़ा अंतर बना हुआ है। यह तस्वीर रिपोर्ट में सामने आई है। जिसे यूजीओवी के साथ मिलकर तैयार किया गया है। रिपोर्ट के मुताबिक महिलाओं में निवेश के प्रति जागरूकता और स्वतंत्रता दोनों तेजी से बढ़ रही हैं, लेकिन वित्तीय लक्ष्य तय करने और दीर्घकालिक योजना बनाने में अभी भी सुधार की काफी गुंजाइश है। इस अध्ययन के लिए 2025 की चौथी तिमाही में देश के 13 शहरों के 5,050 लोगों को शामिल किया गया। सर्वे में 25 से 60 वर्ष आयु वर्ग के ऐसे प्रतिभागियों को चुना गया, जो अपने परिवार के निवेश संबंधी फैसलों में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। अध्ययन में पुरुषों और महिलाओं की संख्या बराबर रखी गई और इसका फोकस मुख्य रूप से शहरी और अपेक्षाकृत उच्च सामाजिक-आर्थिक वर्ग के परिवारों पर रहा।



अब महिलाएं खुद ले रही निवेश के फैसले

रिपोर्ट की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि निवेश के फैसलों में महिलाओं की स्वतंत्र भागीदारी तेजी से बढ़ी है। सर्वे के मुताबिक अब 56 फीसदी महिलाएं निवेश से जुड़े फैसले खुद ले रही हैं, जबकि 2022 में यह आंकड़ा 44 फीसदी था। यानी तीन साल में इसमें 12 फीसदी की उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है। वहीं, पुरुषों में यह आंकड़ा 68 फीसदी है, जो अब भी महिलाओं से अधिक है। लेकिन महिलाओं में तेजी से बढ़ती भागीदारी यह संकेत देती है कि आगे वाले समय में यह अंतर और कम हो सकता है। रिपोर्ट यह भी बताती है कि निवेश के बारे में खुद सीखने वाली महिलाओं की संख्या भी बढ़ रही है। अब करीब 16 फीसदी महिला निवेशकों ने कहा कि उन्होंने निवेश की जानकारी स्वयं हासिल की है, जबकि 2022 में यह आंकड़ा 13 फीसदी था। इसके विपरीत संयुक्त रूप से निवेश निर्णय लेने वाली महिलाओं का हिस्सा 52 फीसदी से घटकर 43 फीसदी रह गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि महिलाएं अब आर्थिक मामलों में ज्यादा आत्मनिर्भर हो रही हैं।

मार्केट-लिंक्ड प्रोडक्ट्स में बढ़ी दिलचस्पी

महिलाएं अब पारंपरिक निवेश विकल्पों के साथ-साथ बाजार से जुड़े निवेश उत्पादों में भी सक्रिय हो रही हैं। सर्वे के मुताबिक करीब 51 फीसदी महिलाएं अब म्यूचुअल फंड और शेयरों में स्वतंत्र रूप से निवेश कर रही हैं, जबकि तीन साल पहले यह आंकड़ा 39 फीसदी था। यह बदलाव इस बात का संकेत है कि महिलाओं में जोखिम लेने की क्षमता और निवेश की समझ दोनों बढ़ रही हैं।

आत्मविश्वास ऊंचा, लेकिन फाइनेंशियल प्लानिंग कमजोर

रिपोर्ट का एक अहम निष्कर्ष यह भी है कि निवेशकों में आत्मविश्वास तो बढ़ा है, लेकिन व्यवस्थित वित्तीय योजना के मामले में अभी भी बड़ा अंतर बना हुआ है। सर्वे के मुताबिक 84 फीसदी लोगों को मरोसा है कि वे निवेश के फैसले खुद लेने में सक्षम हैं। लेकिन सिर्फ 33 फीसदी निवेशकों के पास ही स्पष्ट वित्तीय लक्ष्य और उन्हें हासिल करने की ठोस योजना मौजूद है।

यह भी जानें

- 32 फीसदी लोगों के पास योजना है, लेकिन कोई स्पष्ट लक्ष्य नहीं है।
- 29 फीसदी लोगों ने लक्ष्य तय किए हैं, लेकिन उन्हें हासिल करने की ठोस रणनीति नहीं है।
- 6 फीसदी के पास न लक्ष्य है और न ही कोई योजना।
- 25 से 34 वर्ष की युवा महिलाओं में ज्यादा दिखाई देता है। इस आयु वर्ग की कई महिलाएं निवेश की योजना तो बनाती हैं, लेकिन उनके लक्ष्य स्पष्ट नहीं होते।

पैसे के मायने भी बदल रहे

अध्ययन दिखाता है कि शहरी भारत में पैसे को लेकर लोगों की सोच तेजी से बदल रही है। पहले जहां पैसे को मुख्य रूप से जरूरत या जीविका से जोड़ा जाता था, वहीं इसे आजादी और बेहतर जीवनशैली से जोड़ा जाने लगा है। 2022 में जहां 27 फीसदी लोग पैसे को 'आजादी' से जोड़ते थे, वहीं अब यह आंकड़ा बढ़कर 35 फीसदी हो गया है। इसके विपरीत पैसे को केवल 'जरूरत' से जोड़ने वालों की संख्या घट गई है।

घर से ज्यादा अनुभवों पर खर्च

निवेश व्यवहार में एक दिलचस्प बदलाव यह भी देखने को मिला है कि लोग पारंपरिक संपत्तियों के बजाय अनुभवों को अधिक महत्व देने लगे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक 41 फीसदी महिलाएं घर खरीदने की बजाय यात्रा को प्राथमिकता दे रही हैं, जबकि पुरुषों में यह आंकड़ा 34 फीसदी है। 2025 में करीब 43 फीसदी लोगों ने अतिरिक्त पैसे का इस्तेमाल यात्रा पर किया, जबकि 2022 में यह हिस्सा 36 फीसदी था। वहीं, घर खरीदने को सबसे बड़ा सपना मानने वालों का प्रतिशत 36 फीसदी से घटकर 28 फीसदी रह गया है।

सलाहकारों पर मरोसा लेकिन उपयोग सीमित

- ▶ 39 फीसदी लोग वित्तीय जानकारी किसी अनजान व्यक्ति से साझा करने में असहज महसूस करते हैं।
- ▶ 35 फीसदी का मानना है कि उन्हें अन्य स्रोतों से ही पर्याप्त जानकारी मिल जाती है।
- ▶ 32 फीसदी किसी की सलाह मानने में सहज नहीं होते।
- ▶ निवेश के मामलों में परिवार और दोस्तों की भूमिका सबसे अहम बनी हुई है। 76 फीसदी निवेश संबंधी सलाह अपने सामाजिक दायरे से लेते हैं।
- ▶ निवेश से जुड़े फैसलों में सोशल मीडिया की भूमिका भी तेजी से बढ़ रही है।
- ▶ शेयर बाजार में निवेश करने वाली महिलाओं में 51 फीसदी सोशल मीडिया पर स्टॉक से जुड़े कंटेंट पर सक्रिय रूप से पोस्ट या टिप्पणी करती हैं, जबकि पुरुषों में यह आंकड़ा 36 फीसदी है।



सैलरी और जरूरतों को समझें कितना इमरजेंसी फंड है जरूरी

तैयारी

बिजनेस डेस्क

आज की अनिश्चित आर्थिक परिस्थितियों में केवल निवेश करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि एक मजबूत इमरजेंसी फंड बनाना भी उतना ही जरूरी है। नौकरी की अस्थिरता, अचानक मेडिकल खर्च, बिजनेस में मंदी या किसी पारिवारिक संकट जैसी स्थितियों बिना चेतावनी के सामने आ सकती हैं। ऐसे समय में इमरजेंसी फंड आपके वित्तीय जीवन का सेफ्टी नेट बनता है। लेकिन सबसे बड़ा सवाल यही है आखिर कितना इमरजेंसी फंड होना चाहिए? इसका जवाब हर व्यक्ति के लिए अलग हो सकता है, क्योंकि यह आपकी आय, खर्च, पारिवारिक जिम्मेदारियों और नौकरी की स्थिरता पर निर्भर करता है।

क्या है इमरजेंसी फंड ?

इमरजेंसी फंड वह राशि है जिसे आप केवल आपात स्थिति के लिए अलग रखते हैं। यह पैसा निवेश के लिए नहीं, बल्कि संकट के समय खर्च चलाने के लिए होता है। इसका उद्देश्य है कि किसी भी आकस्मिक स्थिति में आपको कर्ज न लेना पड़े या निवेश तोड़ना न पड़े।

तीन महीने का इमरजेंसी फंड : कितने के लिए सही ?

- ▶ अगर आप सैलरीड कर्मचारी हैं, अविवाहित हैं, इंश्योरेंस या बड़ी वित्तीय जिम्मेदारियां नहीं हैं। आपको नौकरी स्थिर और सुरक्षित है। तो आपके लिए 3 महीने के खर्च के बराबर इमरजेंसी फंड पर्याप्त हो सकता है। उदाहरण के तौर पर, यदि आपका मासिक खर्च 40,000 है, तो कम से कम 1.2 लाख रुपये का इमरजेंसी फंड होना चाहिए। इसमें किराया, राशन, बिजली-पानी, मोबाइल बिल, ट्रांसपोर्ट और बीमा प्रीमियम जैसे आवश्यक खर्च शामिल करें।

6 महीने का इमरजेंसी फंड परिवार वालों के लिए जरूरी

- ▶ यदि आप शादीशुदा हैं या आपके ऊपर परिवार की जिम्मेदारी है, तो जोखिम बढ़ जाता है। ऐसे में कम से कम 6 महीने के खर्च के बराबर फंड रखना समझदारी है। मान लीजिए आपका मासिक खर्च 70,000 है, तो लगभग 4.2 लाख का इमरजेंसी फंड होना चाहिए। इसमें शामिल करें: घर का किराया या इंश्योरेंस, बच्चों की स्कूल फीस, राशन और धरतू खर्च, बीमा प्रीमियम, मेडिकल खर्च, परिवार के साथ रहने पर अचानक खर्च बढ़ सकते हैं, इसलिए ज्यादा सुरक्षा जरूरी है।

9 से 12 महीने का इमरजेंसी फंड अस्थिर आय वालों के लिए

- ▶ अगर आप फ्रीलान्सर हैं, बिजनेस मालिक हैं, कमीशन आधारित आय पर निर्भर हैं, परिवार के अकेले कमाने वाले सदस्य हैं
- ▶ तो आपको 9 से 12 महीने के खर्च के बराबर इमरजेंसी फंड रखना चाहिए। अनिश्चित आय वाले लोगों पर आर्थिक मंदी या बाजार में गिरावट का असर ज्यादा होता है। उदाहरण के लिए, यदि आपका मासिक खर्च 60,000 है, तो 5.4 लाख रुपये से 7.2 लाख तक का फंड सुरक्षित माना जाएगा। यह आपको लंबी अवधि तक वित्तीय स्थिरता देगा।

कितना कम या ज्यादा है सही ?

- ▶ बहुत कम इमरजेंसी फंड जोखिम भरा है, क्योंकि अचानक नौकरी जाने या बीमारी की स्थिति में आपको कर्ज लेना पड़ सकता है। वहीं, जरूरत से ज्यादा पैसा केवल सेविंग अकाउंट में रखने से आपकी निवेश राशि भी कम हो सकती है, क्योंकि उस पर कम रिटर्न मिलता है। इसलिए संतुलन जरूरी है न बहुत कम, न बहुत ज्यादा।

इमरजेंसी फंड कहां रखें ?

1. सेविंग अकाउंट सबसे आसान और लिक्विड विकल्प। पैसा तुरंत निकाला जा सकता है। हालांकि ब्याज दर कम होती है।
2. शॉर्ट-टर्म फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) कम अवधि की एफडी में पैसा रखने से सेविंग अकाउंट से थोड़ा ज्यादा ब्याज मिलता है और जोखिम भी कम रहता है।
3. स्वीप-इन एफडी यह एक बेहतर विकल्प है, जहां आपका पैसा सेविंग अकाउंट में रहता है और जरूरत से ज्यादा राशि खतः एफडी में चली जाती है। जरूरत पड़ने पर ऑटोमैटिक ब्रेक होकर पैसा उपलब्ध हो जाता है। ध्यान रखें, इमरजेंसी फंड को शेयर बाजार, म्यूचुअल फंड या लंबी अवधि के निवेश साधनों में न रखें, क्योंकि बाजार गिरावट के समय आपको नुकसान में पैसा निकालना पड़ सकता है।

इमरजेंसी फंड कैसे बनाएं ?

- ▶ हर महीने सैलरी का 10-20% अलग रखें
- ▶ बोनस या अतिरिक्त आय का हिस्सा जोड़ें
- ▶ खर्चों की समीक्षा कर गैर-जरूरी खर्च कम करें

लक्ष्य तय करें व ऑटोमैटिक ट्रांसफर सेट करें
▶ धीरे-धीरे 6-12 महीने में आपका फंड तैयार हो सकता है।
जीवन की पहली सुरक्षा परत
▶ इमरजेंसी फंड आपके वित्तीय जीवन की पहली सुरक्षा परत है। निवेश से पहले इसे प्राथमिकता देना चाहिए। आपकी सैलरी, नौकरी की स्थिरता और पारिवारिक जिम्मेदारियां तय करती हैं कि आपको 3, 6 या 12 महीने का फंड रखना चाहिए।
▶ सही योजना के साथ बनाया गया इमरजेंसी फंड आपको मानसिक शांति देता है और किसी भी आर्थिक संकट में मजबूती से खड़ा रहता है। यह खर्च सुरक्षा पहलू, निवेश बाद में।

पैसे को सही दिशा देना बेहद जरूरी

बिजनेस डेस्क। आज की अनिश्चित आर्थिक परिस्थितियों में केवल निवेश करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि मजबूत इमरजेंसी फंड बनाना भी उतना ही जरूरी है। नौकरी की अस्थिरता, अचानक मेडिकल खर्च, बिजनेस में मंदी या किसी पारिवारिक संकट जैसी स्थितियां बिना चेतावनी के सामने आ सकती हैं। ऐसे समय में इमरजेंसी फंड आपके वित्तीय जीवन का सेफ्टी नेट बनता है। लेकिन सबसे बड़ा सवाल यही है आखिर कितना इमरजेंसी फंड होना चाहिए? इसका जवाब हर व्यक्ति के लिए अलग हो सकता है, क्योंकि यह आपकी आय, खर्च, पारिवारिक जिम्मेदारियों और नौकरी की स्थिरता पर निर्भर करता है।

क्या है इमरजेंसी फंड ? : इमरजेंसी फंड वह राशि है जिसे आप केवल आपात स्थिति के लिए अलग रखते हैं। यह पैसा निवेश के लिए नहीं, बल्कि संकट के समय खर्च चलाने के लिए होता है। इसका उद्देश्य है कि किसी भी आकस्मिक स्थिति में आपको कर्ज न लेना पड़े या निवेश तोड़ना न पड़े।

तीन महीने का इमरजेंसी फंड : कितने के लिए सही ?
▶ अगर आप सैलरीड कर्मचारी हैं, अविवाहित हैं, इंश्योरेंस या बड़ी वित्तीय जिम्मेदारियां नहीं हैं। आपको नौकरी स्थिर और सुरक्षित है। तो आपके लिए 3 महीने के खर्च के बराबर इमरजेंसी फंड पर्याप्त हो सकता है। उदाहरण के तौर पर, यदि आपका

मासिक खर्च 40,000 है, तो कम से कम 1.2 लाख रुपये का इमरजेंसी फंड होना चाहिए। इसमें किराया, राशन, बिजली-पानी, मोबाइल बिल, ट्रांसपोर्ट और बीमा प्रीमियम जैसे आवश्यक खर्च शामिल करें।

6 महीने का इमरजेंसी फंड : परिवार वालों के लिए जरूरी

▶ यदि आप शादीशुदा हैं या आपके ऊपर परिवार की जिम्मेदारी है, तो जोखिम बढ़ जाता है। ऐसे में कम से कम 6 महीने के खर्च के बराबर फंड रखना समझदारी है। आपका मासिक खर्च 70,000 है, तो लगभग 4.2 लाख का इमरजेंसी फंड होना चाहिए। इसमें शामिल करें: घर का किराया या इंश्योरेंस, स्कूल फीस, राशन और धरतू खर्च, बीमा प्रीमियम, मेडिकल खर्च, परिवार के साथ रहने पर अचानक खर्च बढ़ सकते हैं, इसलिए ज्यादा सुरक्षा जरूरी है।

9 से 12 महीने का इमरजेंसी फंड : अस्थिर आय वालों के लिए जरूरी
▶ अगर आप फ्रीलान्सर हैं, बिजनेस मालिक हैं, कमीशन आधारित आय पर निर्भर हैं, परिवार के अकेले कमाने वाले सदस्य हैं तो आपको 9 से 12 महीने के खर्च के बराबर इमरजेंसी फंड रखना चाहिए। अनिश्चित आय वाले लोगों पर आर्थिक मंदी या बाजार में गिरावट का असर ज्यादा होता है। उदाहरण के लिए, यदि आपका मासिक खर्च 60,000 है, तो 5.4 लाख रुपये से 7.2 लाख तक का फंड सुरक्षित माना जाएगा। लंबी अवधि तक वित्तीय स्थिरता देना।

कितना कम या ज्यादा है सही ? : बहुत कम इमरजेंसी फंड जोखिम भरा है, क्योंकि अचानक नौकरी जाने या बीमारी की स्थिति में आपको कर्ज लेना पड़ सकता है। वहीं, जरूरत से ज्यादा पैसा केवल सेविंग अकाउंट में रखने से आपकी निवेश राशि भी कम हो सकती है, क्योंकि उस पर कम रिटर्न मिलता है। इसलिए संतुलन जरूरी है न बहुत कम, न बहुत ज्यादा।

इमरजेंसी फंड कहां रखें ?

1. सेविंग अकाउंट सबसे आसान और लिक्विड विकल्प। पैसा तुरंत निकाला जा सकता है। हालांकि ब्याज दर कम होती है।
2. शॉर्ट-टर्म फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) कम अवधि की एफडी में पैसा रखने से सेविंग अकाउंट से थोड़ा ज्यादा ब्याज मिलता है और जोखिम भी कम रहता है।
3. स्वीप-इन एफडी यह एक बेहतर विकल्प है, जहां आपका पैसा सेविंग अकाउंट में रहता है और जरूरत से ज्यादा राशि खतः एफडी में चली जाती है। जरूरत पड़ने पर ऑटोमैटिक ब्रेक होकर पैसा उपलब्ध हो जाता है। ध्यान रखें, इमरजेंसी फंड को शेयर बाजार, म्यूचुअल फंड या लंबी अवधि के निवेश साधनों में न रखें, क्योंकि बाजार गिरावट के समय आपको नुकसान में पैसा निकालना पड़ सकता है।

अगर आदत जल्दी बनती है तो जोखिम भी रहता है सीमित

सिर्फ 1000 रुपये की एसआईपी से करोड़पति बन सकती है जेन जेड, रिटायरमेंट तक तैयार हो सकता है बड़ा फंड

समय जितना ज्यादा
कंपाउंडिंग का असर
उतना बड़ा होगा

निवेश मंत्र

बिजनेस डेस्क

आज की युवा पीढ़ी यानी जेन जेड कमाई के साथ-साथ निवेश को लेकर भी पहले से ज्यादा जागरूक हो रही है। 1997 से 2012 के बीच जन्मी यह पीढ़ी टेक्नोलॉजी-फ्रेंडली है और डिजिटल प्लेटफॉर्म के जरिए निवेश करना पसंद करती है, लेकिन बड़ा सवाल यह है क्या सच में सिर्फ 1000 रुपये की एसआईपी से करोड़पति बना जा सकता है? जवाब है हां, अगर शुरुआत जल्दी हो और निवेश लंबी अवधि तक जारी रहे।

क्या है एसआईपी और क्यों खास ?

एसआईपी यानी सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान। यह तरीका आपको हर महीने एक तय राशि निवेश करने की सुविधा देता है। एसआईपी के जरिए निवेश मुख्य रूप से म्यूचुअल फंड में किया जाता है, जिसका प्रदर्शन शेयर बाजार पर निर्भर करता है। एसआईपी की सबसे बड़ी ताकत है कंपाउंडिंग-यानी आपके निवेश पर मिलने वाला रिटर्न भी आगे रिटर्न कमाता है। यही चक्र समय के साथ बड़े फंड में बदल जाता है। मान लीजिए आपकी उम्र 20 साल है और अगर हर महीने 1000 रुपये की एसआईपी शुरू करते हैं। आप यह निवेश 60 साल की उम्र तक यानी 40 साल तक जारी रखते हैं। यदि सालाना 12% अनुमानित रिटर्न मिले।



इसे ऐसे समझें

- कुल निवेश: 1000×12 महीने × 40 साल = 4.8 लाख रुपये
- अनुमानित फंड : लगभग 97.93 लाख रुपये यानी सिर्फ 4.8 लाख रुपये निवेश करके आप करीब 98 लाख रुपये का फंड बना सकते हैं।
- यदि सालाना 15% अनुमानित रिटर्न मिले
- कुल निवेश : 4.8 लाख रुपये
- अनुमानित फंड : लगभग 2.30 करोड़ रुपये
- यहां साफ दिखता है कि रिटर्न में सिर्फ 3% का अंतर भी लंबे समय में कितना बड़ा बदलाव ला सकता है। यही है कंपाउंडिंग की असली ताकत।

जल्दी शुरुआत क्यों है जरूरी ?

अगर आप 20 की उम्र में शुरुआत करते हैं तो आपके पास 40 साल का समय है। लेकिन यदि यही निवेश 30 की उम्र से शुरू करते हैं, तो आपके पास केवल 30 साल बचेंगे और फंड का आकार काफी छोटा हो जाएगा। समय जितना ज्यादा, कंपाउंडिंग का असर उतना बड़ा।

बाजार जोखिम समझना जरूरी

- एसआईपी पूरी तरह शेयर बाजार से जुड़ी होती है। ऐसे में जरूरी बातें समझना जरूरी है।
- रिटर्न कभी भी फिक्स नहीं होता।
- बाजार में तेजी होगी तो ज्यादा रिटर्न मिलेगा।
- गिरावट के समय पोर्टफोलियो में अस्थायी

टाप 5 फंड्स का 5 साल का एनुअल रिटर्न 19 से 20% तक रहा

नुकसान हो सकता है।
■ लंबी अवधि में जोखिम कम हो जाता है।
■ इतिहास बताता है कि लंबी अवधि में इक्विटी बाजार ने बेहतर रिटर्न दिया है, लेकिन धैर्य बनाए रखना जरूरी है।

टैक्स का भी रखें ध्यान

एसआईपी से मिलने वाला मुनाफा पूरी तरह टैक्स-फ्री नहीं होता। इक्विटी फंड में एक साल से ज्यादा निवेश रखने पर लॉन्ग टर्म कैपिटल गेन्स टैक्स लागू होता है (निर्धारित सीमा से ऊपर के लाभ पर)। इसलिए रिटायरमेंट प्लानिंग करते समय टैक्स की गणना भी शामिल करें।

खास सलाह

- लंबा निवेश समय
- डिजिटल प्लेटफॉर्म तक आसान पहुंच
- रिस्क लेने की क्षमता
- अगर आप अभी से 1000 रुपये की एसआईपी शुरू करते हैं और हर साल अपनी आय बढ़ने पर एसआईपी की रकम भी बढ़ाते हैं (स्टेप अप एसआईपी), तो फंड का आकार कई गुना हो सकता है।

निवेश शुरू करने से पहले रखें इन बातों का ध्यान

- इमरजेंसी फंड जरूर बनाएं
- हेल्थ और टर्म इंश्योरेंस लें।
- अपनी जोखिम क्षमता के अनुसार फंड चुनें।
- निवेश लंबी अवधि के लिए रखें, बीच में बंद न करें।
- बाजार गिरने पर घबराकर एसआईपी बंद न करें।

क्या 1000 रुपये काफी

शुरुआत के लिए 1000 रुपये बिल्कुल पर्याप्त है। असली बात रकम नहीं, अनुशासन और निरंतरता है। समय के साथ आप एसआईपी बढ़ा सकते हैं। छोटी रकम से शुरुआत करने का फायदा यह है कि आदत जल्दी बनती है और जोखिम सीमित रहता है। जेन जेड के लिए यह सुनहरा मौका है। 20 की उम्र में शुरू की गई 1000 रुपये की एसआईपी 60 की उम्र तक करोड़ों का फंड बना सकती है। बशर्त निवेश लंबी अवधि तक जारी रहे और अनुशासन बना रहे। याद रखिए, अमीर बनने के लिए बड़ी सैलरी नहीं, बल्कि जल्दी शुरुआत, धैर्य और कंपाउंडिंग की समझ जरूरी है। अगर आज कदम उठाएं, तो रिटायरमेंट के समय आपके पास भारी-भरकम फंड हो सकता है। अब सवाल यह है कि आप अपनी पहली एसआईपी कब शुरू कर रहे हैं?

खबर संक्षेप

हांसी में होगी जन चेतना दिवस रैली 13 को : जोरा उचाना। जजपा जिलाध्यक्ष जोरा सिंह इमरखा ने कहा कि 13 मार्च को जजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अजय सिंह चौधाला के जन्मदिन को हांसी में हरियाणा जन चेतना के रूप में मनाया जा रहा है। हांसी में होने वाली राज्यस्तरीय रैली में उमड़ी भीड़ इस बात का प्रमाण होगी कि प्रदेश में आने वाला कल जेजेपी का है। जींद जिले की सबसे अधिक भागीदारी रैली में होगी।

सामूहिक कामों को लेकर सौपा मांगपत्र उचाना। भाजपा उचाना मंडल महामंत्री रमेश राणा ने सीएम नायब सिंह सैनी से चंडीगढ़ आवास पर मुलाकात की। यहां पर सीएम को सामूहिक कामों को लेकर मांग पत्र भी दिया। इस मौके पर उनके साथ सत्यवान बुजुर्ग, मोहन घसो भी मौजूद रहे। राणा ने कहा कि सीएम नायब सिंह सैनी की अगुवाई में बिना भेदभाव के विकास प्रदेश में हो रहा है। जो बजट सीएम ने वित्त मंत्री होने के नाते प्रस्तुत किया उसमें हर वर्ग के लिए कुछ न कुछ रखा है।

स्वाति को सम्मानित करेगा उचाना सेवा गुप उचाना। यूपीएससी में 366वां रैंक प्राप्त करने वाली सुदकैन कलां की बेटी स्वाति श्योकंद पुत्री दिलबाग को उचाना सेवा गुप 11 मार्च को बेटी गौरव पुरस्कार से सम्मानित करेगा। गुप संचालक मा. रामप्रसाद ने बताया कि सेवानिवृत्त संस्कृत अध्यापक दिलबाग श्योकंद जो सुदकैन कलां गांव से है इन दिनों नरवाना में रहते हैं।

सद्भाव यात्रा से कांग्रेस को मिल रही मजबूती उचाना। कांग्रेस नेता राकेश श्योकंद निरंतर कांग्रेस नेता एवं पूर्व सांसद बुजेंद्र सिंह द्वारा निकाली जा रही सद्भाव यात्रा में उनके कदम से कदम मिलाकर चल रहे हैं। राकेश श्योकंद ने कहा कि इस यात्रा से प्रदेश में कांग्रेस पार्टी को मजबूत मिल रही है। पूर्व सांसद बुजेंद्र सिंह उस भाईचारे को दोबारा से कायम करने का काम कर रहे हैं जिस भाईचारे को भाजपा ने वोट की राजनीति के चलते तोड़ने का काम किया है।

न्यायालय परिसर में स्थापित की हेल्थ डेस्क जींद। हरियाणा राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के निदेशानुसार जिला एवं सत्र न्यायाधीश एवं अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण पुनम सुनेजा के नेतृत्व में आगामी 14 मार्च को जींद, नरवाना व सफेदी न्यायिक परिसर में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा और प्रत्येक कार्य दिवस को स्पेशल प्री लोक अदालत का आयोजन किया जा रहा है।

अनाधिकृत कॉलोनिनों के विरुद्ध प्रशासन सख्त जींद। जिला नगर योजनाकार मनीष ने बताया कि शहरी क्षेत्र नरवाना में विकसित की जा रही अनाधिकृत कॉलोनिनों के विरुद्ध प्रशासन ने सख्त रुख अपनाया है। जिन खसरा नंबरों में बिना लाइसेंस, सीएलयू अथवा एनओसी के अनधिकृत कॉलोनिनों विकसित की जा रही हैं, वहां प्लांटों या छोटे भूखंडों के रूप में किसी भी प्रकार की रजिस्ट्री, एग्रीमेंट डे सेल, फुल पैमेंट एग्रीमेंट अथवा पावर ऑफ अटॉर्नी का पंजीकरण न किया जाए।

गोशाला में चलाया सफाई अभियान उचाना। सनातन धर्म महिला कॉलेज उचाना मंडी में राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर के दूसरे दिन शिविर का शुभारंभ योग एवं मेडिटेशन के द्वारा किया। श्रमदान के लिए स्वयं सेविकाएं बाबा दूधधारी गोशाला पहुंचीं। स्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म बोर्ड कॉलेज आचार्य महावीर सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

उचाना विकास रैली में उमड़ी भीड़ से विपक्षी बचैः संदीप उचाना। भाजपा कसूहन मंडल संयोजक संदीप चहल ने कहा कि 18 फरवरी का दिन उचाना के इतिहास में दर्ज हो गया है। इस दिन विधायक देवेन्द्र चतरभुज अत्री की अगुवाई में रैली हुई थी उमड़ी भीड़ ने इतिहास बनाने का काम किया। खुश हो सीएम ने हर मांग को माना। रैली ने साबित कर दिया है कि जो सवा साल से निरंतर लोगों के बीच रहकर कार्य विधायक कर रहे हैं।

विद्यालय शिक्षा निदेशालय ने सभी शिक्षा अधिकारियों को लिखा पत्र अब छठी से 12वीं कक्षा के छात्रों की भी होगी पीटीएम

विद्यार्थियों के लिए करियर मार्गदर्शन, विषय चयन पर किया जाएगा मार्गदर्शन

हरिभूमि न्यूज ॥ जींद

प्राइमरी कक्षाओं की तरह अब छठी से 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों को भी पीटीएम होगी। इसके लिए विद्यालय शिक्षा निदेशालय ने प्रदेश के सभी जिला शिक्षा अधिकारी, जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी, जिला परियोजना समन्वयक, डाइट प्राचार्य, खंड शिक्षा अधिकारी व विद्यालय मुखिया के नाम पत्र जारी किया गया है। पत्र में कहा गया है कि कक्षा छठी से ऊपर के विद्यार्थियों के लिए करियर मार्गदर्शन, विषय चयन व भविष्य की शैक्षणिक दिशा पर परामर्श दिया जाए। विद्यालय की योजनाओं, कार्यक्रमों व आगामी गतिविधियों की जानकारी प्रदान की जाए। अभिभावकों से सुझाव प्राप्त कर उनका विधिवत अभिलेखीकरण किया जाए व आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। पीटीएम का आयोजन वर्ष में पांच बार किया जाना है। जिसमें वार्षिक परीक्षा उचाना, प्रोबोर्ड उचरगत व बकाया तीन समय-समय पर आयोजित होने वाली सेंट परीक्षाओं के तुरंत बाद आयोजित की जाएगी। प्रदेश के समस्त राजकीय विद्यालयों में



विद्यार्थियों के शैक्षणिक स्तर में सुधार होगा

जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी महेंद्र सिंह ने बताया कि शिक्षक व अभिभावक पीटीएम में बच्चों की खामियों को दूर करने वाले विचार विमर्श कर सकते हैं। कक्षा छठी से 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए भी पीटीएम आयोजित कराया जायेगा। इसके लिए विद्यालय शिक्षा निदेशालय की ओर से पत्र जारी हुआ है। इसके विद्यार्थियों के शैक्षणिक स्तर में सुधार होगा और अभिभावक भी अपने बच्चों की प्रगति रिपोर्ट हासिल कर सकते हैं।

अभिभावक-शिक्षक बैठक (पीटीएम) का नियमित अंतराल पर आयोजन सुनिश्चित करने के उद्देश्य से समय-समय पर निर्देश दिए जाते रहे हैं। विभाग द्वारा विद्यालयों में अभिभावक-शिक्षक संघ के गठन की प्रक्रिया सक्रिय रूप से संचालित की जा रही है ताकि विद्यालय और समुदाय के बीच प्रभावी समन्वय स्थापित किया जा सके। विशेष रूप से निपुण कार्यक्रम के अंतर्गत नियमित अंतराल पर अभिभावक-

उपलब्धियों का प्रदर्शन करते हैं। जिससे अभिभावक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रत्यक्ष रूप से समझ सकें। ऐसे में अभिभावक व शिक्षक बैठकों का आयोजन केवल प्राथमिक स्तर तक सीमित न रखते हुए कक्षा छह से 12 तक के विद्यालयों में भी नियमित अंतराल पर किया जाए ताकि माता-पिता को विद्यार्थियों की शिक्षा में सक्रिय भागीदार बनाया जा सके। विद्यालय शिक्षा निदेशालय ने पत्र में कहा कि पीटीएम में विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति, परीक्षा परिणाम एवं सतत मूल्यांकन (असेसमेंट) की विस्तृत जानकारी अभिभावकों के साथ साझा की जाए। माता-पिता, अभिभावकों के साथ विषयवार अधिगम स्तर (सीखने की स्थिति) का विश्लेषण करते हुए सुधार के लिए आवश्यक शैक्षणिक रणनीतियों पर चर्चा की जाए। विद्यार्थियों की उपस्थिति, समयपालन व अनुशासन की स्थिति की समीक्षा की जाए। होमवर्क, प्रोजेक्ट कार्य पठन-पाठन की आदतों व घर पर अध्ययन वातावरण के संबंध में अभिभावकों से संवाद स्थापित किया जाए।

तमन्ना अव्वल, नेहा द्वितीय रही

पूंडरी में सर्वोत्तम माता पुरस्कार प्रतियोगिता का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ॥ पूंडरी

महिला और बाल विकास कार्यालय, पूंडरी में सर्वोत्तम माता पुरस्कार प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता महिला एवं बाल विकास परियोजना अधिकारी कंचन बाला द्वारा की। प्रतियोगिता का उद्देश्य महिलाओं को अपने बच्चों के स्वास्थ्य और पोषण के प्रति जागरूक करना था। माताओं को अपने स्वास्थ्य के साथ-साथ मातृत्व के महत्व के प्रति जागरूक होना भी जरूरी है। महिलाएं परिवार की रीढ़ की हड्डी मानी जाती है। बच्चों की पहली गुरु मां ही होती है



जो बच्चों को अच्छे स्वास्थ्य, संस्कार और उज्वल भविष्य की नींव रखती है। इस कार्यक्रम के दौरान डॉक्टर राजी ने भी महिलाओं को टीकाकरण, स्वास्थ्य और बच्चों की शिक्षा पर विशेष ध्यान देने पर

बल दिया। प्रतियोगिता के दौरान महिला एवं बाल विकास परियोजना अधिकारी कंचन बाला ने पोषण अभियान, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, प्रधानमंत्री मातृत्व सहायता योजना मुख्यमंत्री मातृत्व सहायता योजना, आंगनबाड़ी सेवाएं तथा बाल विवाह मुक्त भारत के बारे में विस्तृत जानकारी दी। पबनावा निवासी तमन्ना ने प्रथम, पूंडरी निवासी नेहा ने द्वितीय और ओर हजवाना निवासी पूजा ने तृतीय स्थान हासिल किया जिन्हें क्रमशः 4000 रुपए, 3000 रुपए और 2000 रुपए की राशि देकर सम्मानित किया गया।



पूंडरी। विस के बजट सत्र में भाग लेती छात्राओं के साथ विधायक सत्पाल जांबा।

विधायक का जताया आभार

पूंडरी। राकवगाँव सिरसल की छात्राओं के लिए शुक्रवार का दिन बेहद शिक्षाप्रद रहा। विधायक सत्पाल जांबा के विशेष प्रयासों से विद्यालय की 29 छात्राओं और अध्यापकों के दल ने हरियाणा विधानसभा के बजट सत्र की कार्यवाही का सीधा अलोकन किया। इस दौरान छात्राओं ने विधायी प्रक्रिया, जनहित के मुद्दों पर होने वाली चर्चा और सरकार के कामकाज के तैर-तरीकों को करीब से देखा। स्कूल प्रधान और छात्राओं ने पूंडरी के विधायक सत्पाल जांबा का आभार व्यक्त किया। कहा कि उनके सहयोग और समय दिलवाने के कारण ही यह दौरा संभव हो पाया। सदन की कार्यवाही देखने के बाद छात्राओं के चेहरे पर उत्साह साफ झलक रहा था। छात्राओं ने अपने अनुभव साझा करते कहा कि उन्हें विधानसभा में आकर काफी कुछ सीखने को मिला है।

आज महिलाएं किसी से कम नहीं: बबीता रानी

राजौद। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर नगर पालिका चेरपरसुन बबीता रानी ने महिलाओं को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आज महिलाएं हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का लोहा मक्का रही हैं। उन्होंने कहा कि केंद्र व प्रदेश सरकार द्वारा महिलाओं के उत्थान और संशक्तिकरण के लिए अनेक योजनाएं चलाई जा रही हैं, जिनका लाभ महिलाओं तक पहुंचाने के लिए लगातार जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। बबीता रानी ने कहा कि समाज के विकास में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जब महिलाएं शिक्षित और आत्मनिर्भर बनती हैं तो पूरा परिवार और समाज आगे बढ़ता है। उन्होंने कहा कि आज की महिलाएं शिक्षा, खेल, राजनीति, प्रशासन और व्यवसाय सहित हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही हैं और देश के विकास में अहम योगदान दे रही हैं।

पूर्व सैनिक ओम प्रकाश पंचतत्व में विलीन

कैथल। भारतीय सेना के शूरवीर योद्धा जिस ने भारत चीन और भारत पाक युद्धों में इलेक्ट्रॉनिक मैकेनिकल इंजीनियर कोर के अंदर सेवा देते अपनी कलर सर्विस पूरी की एवं राज्य सरकार में आकर भी अपनी सेवा देने वाले पूर्व सैनिक हवलदार ओमप्रकाश चहल ने रात 84 वर्ष की आयु में आखरी सांस ली। पूर्व सैनिक केकेकेयर एसोसिएशन कैथल ने अपनी परंपरा अनुसार हवलदार ओमप्रकाश चहल के घर उनके पौतक गांव बरड़ में पहुंचे। घर जाकर कैप्टन सुखार सिंह जांगड़ा, सार्जेंट महावीर रविश, सार्जेंट अर्जुन दुल, कैप्टन बलजीत मोर, सुबेदार रामनंद मलिक, सुबेदार राम सिंह चहल, रिजालदार कर्मवीर भाल ने एसोसिएशन प्रधान जगजीत फौजी के साथ मिलकर पवित्र शरीर पर तिरंगा ओढ़ाया और सभी पूर्व सैनिक शव यात्रा में शामिल हुए।



जींद। संगोष्ठी में भाग लेते हुए। फोटो: हरिभूमि

काव्य संगोष्ठी का किया आयोजन

जींद। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय साहित्य परिषद जींद इकाई द्वारा स्थानीय स्तर पर काव्य संगोष्ठी का आयोजन किया गया। नारी चेतना, सृजन और स्वाभिमान शीर्षक से आयोजित इस साहित्यिक कार्यक्रम में क्षेत्र के अनेक साहित्यकारों, कवियों तथा परिषद के पदाधिकारियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। हाउसिंग बोर्ड स्थित आवास मानव कुंज में आयोजित इस संगोष्ठी में वैचारिक विमर्श एवं काव्य पाठ में नारी के विविध आयामों ममता, शक्ति, संघर्ष, संवेदना और राष्ट्रनिर्माण में उसकी भूमिका को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया गया। कार्यक्रम में परिषद की जिला इकाई के अध्यक्ष उपाध्यक्ष महासचिव सहसचिव तथा अन्य कार्यकारी सदस्यों के साथ-साथ अन्य प्रतिष्ठित साहित्यकार उपस्थित रहे।

पटक विजेता को किया सम्मानित

जींद। कैथल स्थित डा. भीमवार अंबेडकर कॉलेज में हरियाणा शिक्षा निदेशालय द्वारा 28 से 31 जनवरी तक राज्य स्तरीय बॉक्सिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें हरियाणा के विभिन्न विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों के खिलाड़ियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपने खेल कौशल का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय जींद के युनिवर्सिटी टीचिंग डिपार्टमेंट यूटीडी के खिलाड़ी आर्यन ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 50 से 54 किलोग्राम भार वर्ग में पूरे हरियाणा में तीसरा स्थान प्राप्त कर कांस्य पदक अपने नाम किया। आर्यन ने प्रतियोगिता के दौरान बेहतरीन तकनीक, साहस और खेल भावना का परिचय देते हुए अपने मुकाबलों में दमदार प्रदर्शन किया और विश्वविद्यालय का नाम रोशन किया।



जींद। कार्यक्रम में भाग लेते राजकुमार भोला। फोटो: हरिभूमि

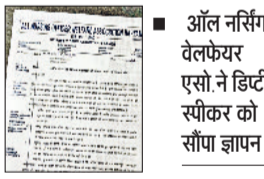
आज डिजिटल का युग: राजकुमार

जींद। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में महिलाओं को डिजिटल रूप से सशक्त-आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल करते महात्मा गांधी शिक्षा एवं समाज विकास संघटन ने हरियाणा नॉलेज कॉर्पोरेशन लिमिटेड के सहयोग से डिजिटल सहेली अभियान की शुरुआत की है। पहल का उद्देश्य महिलाओं को डिजिटल युग की आवश्यक तकनीकी कौशलों से सुसज्जित कर आत्मनिर्भर बनाना है। कार्यक्रम का शुभारंभ संघटन के अध्यक्ष एवं सामाजिक कार्यकर्ता राजकुमार भोला ने किया। आईटी प्रमुख अंकित खटकड़, अजय वर्मा, मेधा सिंगला, मीना, पिकी, सिमरन सहित अन्य सदस्य उपस्थित रहे। इस अवसर पर अध्यक्ष राजकुमार भोला ने कहा कि आज का समय डिजिटल युग का है। जहां डिजिटल साक्षरता एक अनिवार्य आवश्यकता बन चुकी है।

केंद्र की तरह हरियाणा में भी नर्सिंग कैडर को ग्रुप-बी में रखने की मांग

हरिभूमि न्यूज ॥ जींद

ऑल नर्सिंग वेलफेयर एसोसिएशन ने शनिवार को हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर डा. कृष्ण मिड्डा से मुलाकात की और मांगों को लेकर ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन के माध्यम से नर्सिंग ऑफिसर की मांगों को जल्द से जल्द पूरा करने की मांग की गई। ऑल नर्सिंग वेलफेयर एसोसिएशन शनिवार को प्रधान शारदा के नेतृत्व में डेप्टी स्पीकर डा. कृष्ण मिड्डा से मिली। उन्होंने कहा कि नर्सिंग ऑफिसर स्वास्थ्य विभाग की रीढ़ हैं। जो दिन-रात मरीजों की सेवा में समर्पित रहती हैं। वर्तमान समय में



ऑल नर्सिंग वेलफेयर एसोसिएशन के सदस्यों का सानाम करना पड़ रहा है। जिसका निदान अति आवश्यक है। उन्होंने मांग की कि नर्सिंग कैडर सरकार में ग्रुप बी के तहत आता है। जबकि हरियाणा सरकार ने इसे ग्रुप बी की बजाए ग्रुप सी में रखा है। यह नर्सिंग कर्मियों के साथ असमानता और भेदभाव को दर्शाता है। केंद्र सरकार द्वारा नर्सिंग कैडर को नौ

हजार रुपये प्रतिमाह नर्सिंग भत्ता दिया जाता है। जबकि हरियाणा सरकार द्वारा ऐसा कोई भत्ता नहीं दिया जा रहा है। इससे हरियाणा के नर्सिंग ऑफिसर के साथ अन्याय की स्थिति उत्पन्न हो रही है। जुलाई 2025 से नर्सिंग कैडर का वार्षिक अलाउंस बिना किसी पैरव सूचना के बंद कर दिया गया है, जोकि पूरी तरह से अनुचित है। अबतक किसी भी सरकार ने पहले से दिए जा रहे भत्ते को इस प्रकार से बंद करने का निर्णय नहीं लिया था। इसलिए मुख्यमंत्री नर्सिंग कैडर की इन समस्याओं की तरफ ध्यान दें और मांगों को जल्द से जल्द पूरा करें।

जोतराम धाम पर आस-पास के राज्यों और प्रदेश के कौने-कौने से पहुंचे लाखों श्रद्धालु

संत, महापुरुषों, महाराजाओं ने हमें महान शिक्षाएं देने के साथ हम सबको एकत्रित करके रखा : कर्ण प्रताप

हरिभूमि न्यूज ॥ उचाना

लितानी रोड स्थित उचाना के अंडपास के पास बाबा जोतराम मंदिर परिसर में 13वां विशाल जागरण एवं भंडारा का आयोजन हुआ। पंजाब, यूपी, चंडीगढ़, राजस्थान, दिल्ली, कलकत्ता के अलावा प्रदेश के कौने-कौने श्रद्धालु पहुंचे। विभिन्न जगहों से पैदल धजा यात्रा लेकर डिजे के साथ श्रद्धालु पहुंचे। मुख्य अतिथि के रूप में पुलिस अधीक्षक कुलदीप सिंह, कैबिनेट मंत्री कृष्ण



उचाना। कर्ण प्रताप, रामचंद्र अत्री को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित करते हुए।

बेदी के बेटे कर्ण प्रताप, विधायक प्रतिनिधि के तौर पर रामचंद्र अत्री के अलावा प्रमुख लोग पहुंचे। पूरी रात कलाकार बिंदू दनौदा, अमित

द्वूल, राजफूल कुचरनियॉ, प्रवीण चावरियां, सन्नी बलहारा, मनोज बेलरखां, रफीक उचाना, अजय स्टार, विककी छाडियां, लाडली

दिन तक मंदिर परिसर में हवन, पाठ चलता है। सच्चे मन से पूजा-अर्चना करने पर मनोकामनाएं पूर्ण होती है। जागरण में अमेरिका से आई झंझर की डॉ. पूनम ने बताया कि वो बीते साल जागरण के समय उसकी टिकट नहीं बन पाई थी। इस बार तीन महीने पहले टिकट बनवाई थी। मंदिर में पूजा-अर्चना करने से उसका बीमार बेटा ठीक हो गया। उसका मन 12 साल के सोनू ने जागरण में विनोद भागत की पॉप्टा बना कर स्मृति चिन्ह के रूप में भेंट की।

11 युवाओं की टीम गठित की

राजौद। मेरा युवा भारत (माई भारत) के अंतर्गत युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा संचालित कार्यक्रम के तहत मेरा युवा भारत केंद्र कैथल द्वारा राजौद ब्लॉक में युवा मंडल विकास अभियान का आयोजन किया। जिला युवा अधिकारी मोहित जेठवा के निदेशानुसार ब्लॉक राजौद की स्वयंसेविका गुरप्रीत कोर ने बताया कि अभियान के अंतर्गत 11 युवाओं की एक टीम गठित की गई है, जो गांव-गांव जाकर युवा मंडलों को सक्रिय करने का कार्य करेंगी। बताया कि युवा मंडल विकास अभियान का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में युवा मंडलों के नेटवर्क का विस्तार और सुदृढ़ीकरण करना है। इसके तहत निष्क्रिय युवा मंडलों को पुनः सक्रिय किया जाएगा, युवाओं का माई भारत पोर्टल पर पंजीकरण कराया जाएगा तथा उन्हें सामुदायिक विकास और राष्ट्र निर्माण में प्रभावी भूमिका निभाने के लिए नेतृत्व क्षमता और आवश्यक कौशल प्रदान किए जाएंगे। अभियान के माध्यम से युवाओं को संगठित कर सामाजिक, शैक्षणिक और विकासवात्मक गतिविधियों से जोड़ने की दिशा में सार्थक पहल की जा रही है। माई भारत के अंतर्गत कार्य करते हुए युवाओं को राष्ट्रसेवा, सामाजिक जिम्मेदारी और नेतृत्व क्षमता की ओर प्रेरित करता है। युवा क्लब का उद्देश्य युवाओं में राष्ट्रभक्ति और सामाजिक चेतना का विकास करना, सेवा भाव व नेतृत्व कौशल को बढ़ावा देना, शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता और आत्मनिर्भर और जिम्मेदार नागरिक तैयार करना है।

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय केलरम (2274) जिला कैथल बोली सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय केलरम (कैथल) (School Code-2274) के 3 कंडम कक्षाओं की बोली दिनांक 13/03/2026 दिन शुक्रवार को प्रातः 10 बजे विद्यालय प्रांगण में बोलीघरित की गई है। अतः कोई भी बोलीदाता उसमें शामिल होकर बोली दे सकता है। बोली के लिए एकाग्रता राशि Security Amount 20000/- रुपये (बीस हजार रुपये) रखी गई है। बोली की बाकी शर्तों पर ही बता दी जाएगी। प्रधानाचार्य व एडमिशन ऑफिस नंबर 94165-63584

खबर संक्षेप

शिवाजी बनी कलस्टर स्तर पर बेस्ट मटर कैथल। महिला एवं बाल विकास विभाग के खंड कैथल शहरी में बेस्ट मटर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य माताओं को बच्चों के स्वास्थ्य पोषण और शिक्षा के प्रति जागृत करना रहा। इस प्रतियोगिता में 12 माताओं ने भाग लिया। कंचन बाला द्वारा महिलाओं से बच्चों के सर्वांगीण विकास स्वास्थ्य और पोषण और शिक्षा से संबंधित सवाल किए गए। महिलाओं को सरकार द्वारा चलाई जा रही स्कीमों के लिए जागरूक किया गया। प्रतियोगिता में सकल स्तर पर प्रथम को 2000, द्वितीय को 1200 और तृतीय को 800 का पुरस्कार दिया जाएगा।

मकान का ताला तोड़कर मोटर चुराई

कैथल। गांव कौल में खाली पड़े मकान का ताला तोड़कर चोरों ने चारा काटने वाली मशीन की बिजली मोटर चोरी कर ले गए। मामले में डांड थाना पुलिस ने मकान मालिक की शिकायत पर अज्ञात चोर के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। गांव कौल निवासी एकलव्य ने बताया कि वह पिछले एक वर्ष से अपने माता-पिता के साथ डांड में रह रहा है। जबकि उसका पुराना घर गांव कौल में है, जहां उसका कुछ सामान रखा हुआ है। 5 मार्च की सुबह जब वह अपने पुराने घर गया तो घर का ताला टूटा हुआ मिला।

राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष दो दिन जींद दौरे पर

जींद। उपायुक्त मोहम्मद इमरान रजा ने बताया कि हरियाणा राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष रेनु भाटिया आगामी नौ व 10 मार्च को जींद जिला के आधिकारिक दौरे पर रहेंगी। उन्होंने बताया कि नौ मार्च को निर्धारित कार्यक्रमों में भाग लेंगी। इसके बाद 10 मार्च को लघु सचिवालय स्थित सभागार में जन सुनवाई करेंगी। जिसमें जिला से संबंधित मामलों की सुनवाई की जाएगी। इस दौरान सभी संबंधित विभागों के अधिकारी भी उपस्थित रहेंगे। इसके लिए सुरक्षा एवं व्यवस्थाओं के लिए संबंधित विभागों को निर्देश दिए गए हैं।

बाइक की टक्कर से ई-स्कूटी सवार युवक घायल

कैथल। गांव मटौर में चौशाला रोड पर तेज रफ्तार बाइक की टक्कर से ई-स्कूटी सवार युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। मामले में कलायत थाना पुलिस ने शिकायत के आधार पर आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस को दी गई शिकायत में गांव मटौर के चतर सिंह ने बताया कि 4 मार्च को दोपहर करीब सवा 12 बजे वह खेत से घर लौट रहा था। जब वह चौशाला रोड के पास पहुंचा तो सामने से तेज रफ्तार में आ रहे बाइक सवारों ने उसकी इलेक्ट्रिक स्कूटी को टक्कर मार दी।

राजकीय पाठशाला में किया पौधरोपण

सीवन। समाजसेवी अभिषेक मेहता ने राजकीय प्राथमिक पाठशाला ककहेडी प्लॉट में पहुंचकर पौधरोपण किया। इस दौरान विद्यालय परिसर में विभिन्न प्रकार के पौधे लगाए गए और विद्यार्थियों को भी पर्यावरण के महत्व के बारे में जागरूक किया गया। कार्यक्रम के दौरान स्कूल मुखिया जसवीर शर्मा ने कहा कि वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण बेहद आवश्यक हो गया है। बढ़ते प्रदूषण और घटते हरित क्षेत्र को देखते हुए प्रत्येक व्यक्ति को अधिक से अधिक पौधे लगाने चाहिए।

आरकेएसजी कॉलेज में मेगा हेल्थ कैंप आज

कैथल। आरकेएसजी कॉलेज के परिसर में आज रविवार को मेगा हेल्थ कैंप आयोजित किया जाएगा। यह स्वास्थ्य शिविर सुबह 10 बजे से सायं 4 बजे तक आयोजित किया जाएगा। सांसद नवीन जिन्दल के कैथल कार्यालय प्रभारी रविंद्र धीमान ने बताया कि अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस व सांसद नवीन जिन्दल के 56वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में होगा। कैंप में सामान्य चिकित्सा, सामान्य शल्य चिकित्सा, बाल रोग, मनोरोग, टी.बी. एवं छाती रोग, प्रसूति एवं स्त्री रोग, स्नान कैंसर स्क्रीनिंग, एनीमिया जांच क्लवा एवं यौन रोग, फिजियोथेरेपी की जाएगी।

घरौंडा में चिकित्सक के साथ की गई मारपीट के विरोध में हड़ताल, एसएचओ को हटाने की मांग

सरकारी अस्पतालों के चिकित्सक हड़ताल पर, भटके मरीज



जींद। मांगों को लेकर ट्रेनिंग सेंटर के बाहर नारेबाजी करते हुए चिकित्सक। फोटो: हरिभूमि



जींद। नागरिक अस्पताल में इमरजेंसी के अंदर उपचार के लिए लगी भीड़। फोटो: हरिभूमि



जींद। हड़ताल के चलते खाली पड़ी कुर्सियां। फोटो: हरिभूमि

इमरजेंसी, डिलवरी तथा पोस्टमार्टम जैसी अहम सेवाओं को रखा बहाल



जींद। नागरिक अस्पताल में चिकित्सकों की हड़ताल के चलते खाली पड़ी कुर्सियां व गायनी वार्ड के बाहर मौजूद लोग।



जींद। नागरिक अस्पताल में चिकित्सकों की हड़ताल के चलते खाली पड़ी कुर्सियां व गायनी वार्ड के बाहर मौजूद लोग।

हरियाणा सिविल मेडिकल सर्विस एसोसिएशन के आह्वान पर शनिवार को सरकारी अस्पतालों के चिकित्सक घरौंडा में चिकित्सक के साथ पोस्टमार्टम जैसी अहम सेवाओं को बहाल रखा गया। ओपीडी में चिकित्सकों के न मिलने से मरीजों व उनके तिमरदारों को परेशानी का सामना करना पड़ा। केवल गंभीर मरीजों को ही इमरजेंसी में उपचार मिल पाया और वहां भी लोगों की भीड़ रही। शनिवार को कुल ओपीडी 1072 रही। जिसमें 500 नई ओपीडी की स्लिप कटी तो 572 पुराने मरीज रहे। हालांकि मरीज तथा तिमरदार सुबह ही अस्पतालों में पहुंचना शुरू हो गए थे। उनकी ओपीडी स्लिप तो कटी लेकिन चिकित्सकों ने ओपीडी नहीं की।

चिकित्सक से मारपीट के विरोध में की हड़ताल
हरियाणा सिविल मेडिकल सर्विस एसोसिएशन के आह्वान पर चिकित्सक नागरिक अस्पताल के ट्रेनिंग सेंटर में एसएमए एसोसिएशन के प्रदेश महासचिव डा. बिजेन्द्र ढांडा, डिप्टी एमएस डा. राजेश भोला के नेतृत्व में एकत्रित हुए। प्रदेश महासचिव डा. बिजेन्द्र ढांडा ने कहा कि चिकित्सक अपना कार्य पूरी ईमानदारी से करते हैं। घरौंडा एसएचओ द्वारा की गई मारपीट के बाद वो घरौंडा में चिकित्सक से भी मिले हैं। उन्होंने पूरी घटना की जानकारी हासिल की है। स्थानीय प्रशासन कोई सख्त कार्रवाई नहीं कर रहा है जबकि चिकित्सक एसएचओ पर मामला दर्ज किए जाने की मांग पर अड़े हैं। डिप्टी एमएस डा. राजेश भोला ने कहा कि चिकित्सकों को भगवान का दर्जा दिया गया है। घरौंडा में भी होली पर्व पर चिकित्सक अपनी ड्यूटी कर रहे थे। मरीजों की भीड़ को देखते हुए पुलिस सुरक्षा चाहिए थी। सुरक्षा मुहैया करवाने की बजाए एसएचओ दीपक कुमार ने

मारपीट के बाद वो घरौंडा में चिकित्सक से भी मिले हैं। उन्होंने पूरी घटना की जानकारी हासिल की है। स्थानीय प्रशासन कोई सख्त कार्रवाई नहीं कर रहा है जबकि चिकित्सक एसएचओ पर मामला दर्ज किए जाने की मांग पर अड़े हैं। डिप्टी एमएस डा. राजेश भोला ने कहा कि चिकित्सकों को भगवान का दर्जा दिया गया है। घरौंडा में भी होली पर्व पर चिकित्सक अपनी ड्यूटी कर रहे थे। मरीजों की भीड़ को देखते हुए पुलिस सुरक्षा चाहिए थी। सुरक्षा मुहैया करवाने की बजाए एसएचओ दीपक कुमार ने

मेडिकल के लिए भटके दिखे युवा

शनिवार को हड़ताल के चलते चिकित्सकों ने काम नहीं किया। जिसके चलते मेडिकल करवाने आए अमर्यादियों को परेशानी का सामना करना पड़ा। युवा नरेश व दिवेश ने बताया कि उनका सिलेक्शन केंद्र सरकार की सेवा में हुआ है। वो मेडिकल करवाने के लिए आए थे लेकिन चिकित्सक हड़ताल पर हैं। वो जल्द से जल्द मेडिकल प्रक्रिया को पूरा करवाना चाह रहे थे लेकिन हड़ताल के चलते प्रक्रिया शुरू ही नहीं हो पाई।

हड़ताल के दौरान निभाया नैतिक फर्ज

हरियाणा सिविल मेडिकल सर्विस एसोसिएशन के प्रधान डा. बिजेन्द्र ढांडा तथा डिप्टी एमएस डा. राजेश भोला ने बताया कि हड़ताल पर रहते हुए भी चिकित्सक अपना नैतिक फर्ज निभाया है। सभी अस्पतालों में इमरजेंसी, डिलवरी तथा पोस्टमार्टम सेवाओं को बहाल रखा गया है ताकि आमजन को भी कोई परेशानी न हो, इसका भी विशेष ध्यान रखा गया है।

1200 से ऊपर पहुंची ओपीडी, भटके मरीज

जिला मुख्यालय स्थित नागरिक अस्पताल 200 बैड का है। यहां प्रतिदिन सप्ताहभर में औसतन 1800 तक की ओपीडी होती है। सोमवार या किसी छुट्टी से अगले दिन यह ओपीडी बढ़ कर दो हज़ार तक पहुंच जाती है। शुक्रवार को अस्पताल खुरने के साथ ही मरीज पहुंचना शुरू हो गए। पूरे दिन में 1072 हुई। अस्पताल में उपचार के लिए आई सुगीता ने बताया कि उसकी हथ की हड्डी में दर्द है लेकिन चिकित्सक दो घंटे हड़ताल पर हैं। अब उन्हें निजी अस्पताल में उपचार के लिए जाना होगा। वहीं दमे के रोगी राजेश ने बताया कि उसे दवा लेनी थी और वह सुबह ही पहुंच गया था। यहां चिकित्सक हड़ताल पर थे। उस से सांस लेने में भी परेशानी हो रही है।

इमरजेंसी वार्ड के आगे रही लोगों की भीड़

सरकारी अस्पतालों में चिकित्सकों की हड़ताल के चलते लोगों को उपचार के लिए भटके पड़ा। हालांकि इमरजेंसी सेवाएं ही बहाल रखी गई थी और इमरजेंसी वार्ड में उपचार को लेकर लोगों की भारी भीड़ लगी रही।

हड़ताल की जानकारी उच्च अधिकारियों को दी: सीएमओ

सीएमओ डा. सुमन कोहली ने बताया कि चिकित्सकों की हड़ताल की जानकारी उच्च अधिकारियों को दे दी गई थी। अस्पताल में इमरजेंसी, पोस्टमार्टम और लेबर जैसी सेवाएं जारी रही हैं। गंभीर मरीजों का उपचार इमरजेंसी में करवाया गया है।

शिक्षा भारती के पूर्व छात्र ने पास की यूपीएससी गांव मैणी माजरा पहुंची सद्भाव यात्रा

■ अंकित नारु ने संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा में हासिल की 826वीं रैंक



कैथल। पूर्व छात्र अंकित नारु के यूपीएससी में चयनित होने पर खुशी जताते शिक्षा भारती विद्या निकेतन कलायत के रटाफ सदस्य व विद्यार्थी। फोटो: हरिभूमि

सफलता असली जीत

चेयरमैन कुलदीप सिंह ने कहा कि अंकित की सफलता हमारी शिक्षा पद्धति और छात्र के अटूट संकल्प की जीत है। उन्होंने यह साबित कर दिया कि लक्ष्य चाहे कितना भी बड़ा क्यों न हो, यदि इरादे नेक और मेहनत सच्ची हो, तो सफलता अवश्य मिलती है।

■ भाजपा देश की संप्रभुता से कर रही समझौता : बृजेन्द्र सिंह



कैथल। सद्भावना यात्रा के दौरान पूर्व सांसद बृजेन्द्र सिंह का स्वागत करते कांग्रेस कार्यकर्ता।

हरिभूमि न्यूज ►► कैथल

शिक्षा भारती विद्या निकेतन कलायत के पूर्व छात्र अंकित नारु ने संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा में 826वीं रैंक (AIR 826) प्राप्त कर संस्थान और क्षेत्र का गौरव बढ़ाया है। अंकित की इस अभूतपूर्व सफलता की खबर मिलते ही स्कूल परिसर में हर्षोल्लास का माहौल बन गया। अंकित के पिता हरियाणा पुलिस के एक सेवानिवृत्त अधिकारी हैं। अंकित की प्रतिभा बचपन से ही निखर कर सामने आने लगी थी; उनकी बेहतरीन पेंटिंग

कला के लिए उन्हें हरियाणा के महामहिम राज्यपाल द्वारा भी सम्मानित किया जा चुका है। आज उनकी उसी एकाग्रता और मेहनत ने उन्हें देश की सबसे प्रतिष्ठित सेवा के मुकाम तक पहुंचाया है। अंकित की सफलता के उपलक्ष्य में शिक्षा भारती विद्या निकेतन के प्रांगण में एक विशेष जश्न का आयोजन किया गया। स्कूल प्रबंधन ने घोषणा की है कि जल्द ही मैनेजमेंट कमेटी और सभी शिक्षक व्यक्तिगत रूप से अंकित के निवास स्थान पर जाकर उन्हें और उनके परिवार को

सम्मानित करेंगे। प्रधानाचार्य जितेंद्र सिंह ने कहा कि हमें गर्व है कि वह इस स्कूल के विद्यार्थी रहे हैं। इस उपलब्धि पर अमनदीप सिंह, वाइस प्रिंसिपल अमरदीप शर्मा, वर्षा गिधर, पंकज जांगड़ा, सुखबीर लोहान, रामनरेश भारद्वाज, सरोज रानी, पूनम कौशिक, रणबीर, रजत मोर, रेखा राय, सुनीता सहायण आदि मौजूद रहे।

हरिभूमि न्यूज ►► कैथल

ये रहे यात्रा में उपस्थित

कांग्रेस नेता बृजेन्द्र सिंह सद्भाव यात्रा के दौरान गांव खनोदा में आयोजित जनसभा को संबोधित कर रहे थे। सद्भाव यात्रा आज शनिवार को 154 वें दिन में पहुंच गई है जो कैथल के गांव मैणी माजरा से हुई। इसके बाद यात्रा गांव ग्योंग, गांव कठवाड, गांव धौस से होते हुए गांव खनोदा में संपन्न हुई। इस मौके पर जिलाध्यक्ष रामचंद्र कुंजर, पूर्व विलायक जोगी राम, सुशीला शर्मा, सुरेंद्र दुल, पीएल मारद्वान, लाजवती दिल्ली, सविता कुंडू, राजेंद्र चवहल, युधिष्ठिर तंवर, जयपाल शर्मा, सुनीता राणा, राजवीर संघु आदि मौजूद रहे।

15 को होगा अग्रवाल वैवाहिक सम्मेलन स्वतंत्रता प्रदान करना महिला दिवस की सार्थकता

■ परिचय सम्मेलन समाज को जोड़ने और योग्य रिश्तों के चयन का सशक्त मंत्र



जींद। परिचय सम्मेलन को लेकर प्रचार करते अग्रवाल समाज के प्रधान राजकुमार गोयल व अन्य पदाधिकारी। फोटो: हरिभूमि

■ जब हर महिला आत्मनिर्भर, सशक्त तभी एक समृद्ध, न्यायपूर्ण और संतुलित समाज का निर्माण संभव होगा : उषा



उषा गुप्ता (जिला महिला अध्यक्ष) अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत जींद।

हरिभूमि न्यूज ►► जींद

अखिल भारतीय अग्रवाल समाज हरियाणा के अध्यक्ष डा. राजकुमार गोयल ने बताया कि आगामी 15 मार्च को अग्रसेन भवन सेक्टर 8 करनल में अग्रवाल वैवाहिक परिचय सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। यह सम्मेलन विवाह योग्य युवक व युवतियों के लिए अग्रवाल समाज के चयन का एक सुनहरा अवसर साबित होगा। गोयल बैंक रोड पर समाज के पदाधिकारियों की एक बैठक को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस हर वर्ष आठ मार्च को विश्वभर में मनाया जाता है। यह दिन महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक उपलब्धियों का स मान करने के साथ-साथ लैंगिक समानता की दिशा में किए जा रहे प्रयासों को भी रेखांकित करता है। यह केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि एक आंदोलन है जो समाज में महिलाओं की भूमिका को सशक्त और स मानित बनाने का प्रतीक है।

हरियाणा ने रेड आर्मी को 3-0 से हराया, दर्शकों से खचाख भरा स्टेडियम

गांव कौल में आयोजित प्रतियोगिता में दूसरे दिन खेले गए रोमांचक मुकाबले

स्व. बलवंत सिंह वॉलीबॉल प्रतियोगिता कौल ने रेलवे टीम को दी 3-1 से शिकस्त

हरिभूमि न्यूज ►► ढांड



ढांड। वॉलीबॉल प्रतियोगिता के दौरान मैदान में रोमांचक मुकाबला खेलते खिलाड़ी।

सीआईएसएफ ने आईडीसी को 3-0 से हराया

इस मौके पर ट्रस्ट के प्रधान जगपाल सिंह, केहर सिंह कोच, सरपंच प्रतिनिधि नरेश कुमार आदरती, नरेंद्र कुमार, नरेश कुमार, ह्यान सिंह, रामपाल, सुभाष पडवाल, नरसी राम, संजीव कोच, मास्टर पवन कुमार, अनिल सागवाल, बलकविंद सिंह, रेफरी अजीत सिंह, महेंद्र सिंह सहारण व सुमित कुमार सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे। कोच संजीव कुमार ने बताया कि हरियाणा ने रेड आर्मी को 3-0 से हराया। राजस्थान ने एयरफोर्स को 3-1 से पराजित किया। सीआईएसएफ ने एचएसआई आईडीसी को 3-0 से हराया, जबकि कोल की टीम ने रेलवे को 3-1 से मात दी।

मुख्यमंत्री स्कूल सौंदर्यीकरण प्रतियोगिता में सिसला स्कूल रहा जिला स्तर पर प्रथम

कैथल। मुख्यमंत्री स्कूल सौंदर्यीकरण प्रतियोगिता में जिला कैथल के राजकीय मॉडल संस्कृति प्राथमिक विद्यालय सिसला जिला स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया है। विद्यालय के मुख्य शिक्षक राजेश दुल ने इस सफलता पर बधाई देते हुए कहा कि यह उपलब्धि पूरे स्टाफ की मेहनत और टीम भावना का परिणाम है। उन्होंने बताया कि विद्यालय के शिक्षक अपने शिक्षण कार्य के लिए निरंतर प्रयास करते रहते हैं। शिक्षक छुट्टी वाले दिन भी विद्यालय के लिए परिश्रम करते रहते हैं। विद्यालय के शिक्षक राकेश कुमार, सुखबीर शर्मा, सतीश कुमार, नसीब तथा संजय कुमार एक टीम के रूप में विद्यालय हित में लगातार कार्य कर रहे हैं।



बीते कुछ दशकों में हमारे समाज की महिलाएं घर-परिवार की जिम्मेदारी समालाने के साथ कार्यक्षेत्र में भी शानदार मुकाम हासिल करने लगी हैं। यह नया सामाजिक बदलाव, परिवार और कार्यक्षेत्र में संतुलन की उनकी कुशल भूमिका से ही संभव हो पा रहा है।



हर क्षेत्र में फहरा रहा आधी आबादी का परचम

अब वो दिन लट गए, जब आधी आबादी के लिए कुछ निश्चित कार्यक्षेत्र ही हुआ करते थे। आज के दौर में बेटियां हर उस क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही हैं, जिन्हें पहले उनके लिए वर्जित माना जाता था। देश की सुरक्षा से लेकर वैज्ञानिक अनुसंधान तक और खेल के मैदानों में भी कामयाबी की नित नई मिसालें गढ़ रही हैं। आधी आबादी के विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ते कदम पर एक नजर।

कवर स्टोरी / लोकमित्र गौतम

आधी सुबह के 4 बज रहे हैं। हरियाणा के एक छोटे से गांव में रहने वाली 19 साल की एक लड़की अपने जूतों में फीते कस रही है। उसके सामने कोई दरक नहीं है, कोई कैमरा नहीं है। है तो सिर्फ एक लंबा सा ट्रैक और दिल दिमाग में एक रंगीन सपना। यह सपना एथलेटिक्स में कुछ कर दिखाने का है। यह सपना किसी एक हरियाणवी लड़की का ही नहीं है, बल्कि आज भारत की हजारों-लाखों किशोरियों और युवतियों की आंखों में खेल से लेकर सेना और विज्ञान जैसे सभी जटिल और एक जमाने तक पुरुषों के वर्चस्व वाले क्षेत्र में कुछ कर दिखाने का है। साल 2026 का भारत इस मायने में ऐतिहासिक दौर से गुजर रहा है, क्योंकि आज कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जहां युवा महिलाएं दस्तक न दे रही हों। अब देश में कोई ऐसा क्षेत्र विशेष नहीं रहा, जिसे एकस्वल्सिवाली पुरुषों का वर्चस्व वाला क्षेत्र कहा जा सके। सभी क्षेत्रों में पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर भारत की युवा महिलाएं खड़ी हैं।



गढ़ रही जीत की नई परिभाषा
भारत में खेल लंबे समय तक पुरुषों के वर्चस्व वाला क्षेत्र माना जाता रहा है। लेकिन हाल के कुछ दशकों में युवा महिलाओं ने इस धारणा को बदल दिया है। हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, पूर्वोत्तर भारत आदि की युवा महिला एथलीटों ने ओलंपिक, एशियाई खेलों, राष्ट्रमंडल खेलों और विश्व चैंपियनशिप में कामयाबी के झंडे गाड़े हैं। साल 2024 के पेरिस ओलंपिक में

भारत की महिला खिलाड़ियों ने कुल पदकों में महत्वपूर्ण योगदान दिया और उसके पहले कई ओलंपिक खेल ऐसे भी संपन्न हुए हैं, जब भारत की तरफ से कामयाबी का सेहरा सिर्फ लड़कियों के सिर बंधा है। आज बैडमिंटन, शूटिंग, क्रिकेट, हॉकी, रसलिंग और बॉक्सिंग ये ऐसे क्षेत्र हैं, जिनमें भारत की बेटियां राज कर रही हैं। अब देश के गांवों से युवा महिला पहलवान और मुक्केबाज निकल रही हैं। खेलों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी का एक महत्वपूर्ण कारण है, खेलों को लेकर शुरू की गई कई शानदार सरकारी योजनाएं, जिसमें एक प्रमुख योजना 'खेलो इंडिया' भी शामिल है। इसमें बेहतर प्रशिक्षण की बंदोबस्त भारतीय लड़कियां पूरी दुनिया में कामयाबी के झंडे गाड़ रही हैं। लेकिन इससे बड़ा परिवर्तन उन भारतीय परिवारों का है, जो उनकी मानसिकता में आया है। अब गांवों में भी मां-बाप बेटियों को खेल के मैदान में खुशी-खुशी भेजने लगे हैं। जबकि एक समय तक उन्हें सिर्फ शादी के लिए पाल पोसकर बड़ा किया जाता था।

संगमल रही सुरक्षा की कमान

लंबे समय तक भारतीय सेना महिलाओं के लिए बहुत सीमित अवसर प्रदान करती रही है। लेकिन पिछले कुछ दशकों में यह स्थिति तेजी से बदली है। आज युवा महिलाएं न केवल बड़ी संख्या में सैन्य अधिकारी बन रही हैं बल्कि लड़ाकू विमान उड़ा रही हैं, वे युद्ध पोतों पर तैनात हैं। भारतीय वायु सेना में महिला फाइटर पायलटों की संख्या लगातार बढ़ रही है। साल 2003 के बाद राष्ट्रीय रक्षा आकादमी (एनडीए) में महिलाओं के प्रवेश ने इस बदलाव को गति दी है। अब 18-19 वर्ष की लड़कियां सीधी एनडीए में प्रशिक्षण लेकर सेना की स्थायी अधिकारी बन रही हैं। यह बदलाव सिर्फ सैन्य संरक्षण का बदलाव नहीं है बल्कि सामाजिक सोच में आए परिवर्तन का संकेत है। एक समय था, जब सेना को पूर्णतः पुरुषों का पेशा माना जाता था। लेकिन अब युवा महिलाएं सीमा की सुरक्षा में कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी हैं। नौसेना में भी महिलाएं युद्ध पोतों पर तैनात हैं। लंबी समुद्री यात्राओं का हिस्सा हैं और यह साबित कर रही हैं कि शारीरिक और मानसिक क्षमता के मामले में महिलाएं किसी भी तरह से पुरुषों से कम नहीं हैं। पुरुषों के समान ही वे भारतीय सीमाओं की रक्षा में कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी रहें हैं।

हासिल कर रही वैज्ञानिक उपलब्धियां

विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में भी युवा महिलाएं बड़ी तेजी से आगे बढ़ रही हैं। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो), राष्ट्रीय रक्षा अनुसंधान संगठन (डीआरडीओ) और विभिन्न वैज्ञानिक संस्थानों में महिलाओं की न केवल भागीदारी बहुत तेजी से बढ़ रही है बल्कि कई क्षेत्रों में तो वो पुरुषों से भी आगे हैं। हाल के सालों में देश के सबसे महत्वपूर्ण माने गए चंद्रयान और मंगलयान जैसे अंतरिक्ष मिशनों में भारतीय महिला वैज्ञानिकों की कामयाबी देखते ही बनती है। यही कारण है कि आज देश में विज्ञान के क्षेत्र में दाखिला लेने वाली लड़कियों की बड़ी संख्या सामने आ रही है, क्योंकि आज भारत की एक नहीं बल्कि अनेक अंतरिक्ष अभियानों में भारत की युवा महिलाएं कामयाबी का श्रेय हासिल कर रही हैं। अंतरिक्ष विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी और रक्षा अनुसंधान में भी इनकी भूमिका और योगदान पुरुषों से पीछे नहीं है। आईआईटी, आईआईएससी और अन्य प्रमुख वैज्ञानिक संस्थानों में जाकर देख लीजिए, आज ज्यादातर जगहों में महिला छात्र, पुरुष छात्रों के बराबर हैं, कहीं कुछ कम हैं। ये छात्राएं न केवल पढ़ाई कर रही हैं बल्कि अपनी मौलिक मेधा से अपने लक्षित कार्यक्रमों में सफलता हासिल करके उपलब्धियों की नई कहानी रच रही हैं। *

परिवार - कार्यक्षेत्र में संतुलन बनाती महिलाएं

बदलाव / अपराजिता

आठ मार्च, अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस, केवल एक उत्सव का दिन नहीं है। यह गहरे सामाजिक परिवर्तन और प्रतीक का दिन भी है। यही प्रतीकात्मक परिवर्तन, भारत की युवा महिलाओं की सोच, प्राथमिकताओं और जीवन के निर्णयों में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ रहा है। एक जमाना था, जब अधिकांश युवतियां विवाह को ही सबसे जरूरी लक्ष्य मानकर जीवन जीती थीं। लेकिन आज भारत की युवा नारी के लिए विवाह एकमात्र जीवन लक्ष्य नहीं है बल्कि यह उसके जीवन के कई विकल्पों में से एक है। भारत की युवा महिलाएं करियर, आत्मनिर्भरता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को इन दिनों बराबर का महत्व दे रही हैं और उनकी प्राथमिकता में यह सब अचानक नहीं आया, इसके पीछे दशकों की शिक्षा, आर्थिक अवसरों का विस्तार तथा आत्मसम्मान की नई जागृति ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन्हीं सबके चलते विवाह जो कभी जीवन का एकमात्र प्रथम और आखिरी लक्ष्य हुआ करता था, आज की महिलाओं के लिए वह एक वैकल्पिक बन चुका है।

दिल्ली, बंगलुरु, मुंबई, पुणे, हैदराबाद, चेन्नई और कोलकाता ही नहीं बल्कि रांची, लखनऊ और जयपुर जैसे शहरों में भी अब यह बदलाव तेजी से देखने को मिल रहा है। आज इन शहरों में ही नहीं बल्कि छोटे-छोटे कस्बों में भी युवा महिलाओं की विवाह की उम्र बहुत आसानी से 28 से 30 साल के बीच हो गई है। जबकि एक जमाना था, जब किसी महिला की 20 साल तक अगर शादी नहीं होती थी, तो घर-परिवार में हंगामा मच जाता था। यही नहीं आज देश में 8 करोड़ से ज्यादा महिलाएं अपने स्वतंत्र निर्णय के चलते बिना विवाह किए रह रही हैं। आज के 30-40 साल पहले इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। वास्तव में महिलाओं में आया यह बदलाव सिर्फ शादी की उम्र में देरी का बदलाव नहीं है बल्कि उनकी सोच में अपने प्रति आई परिपक्वता का बदलाव है।

मनमुताबिक ले रही निर्णय: अब महिलाएं बड़ी सहजता से अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता के संबंध में निर्णय लेने लगी हैं और यह निर्णय केवल घर से हजारों किलोमीटर दूर जाकर काम करने भर का नहीं है बल्कि यह निर्णय इस मामले में भी है कि उन्हें किस क्षेत्र में अपना करियर बनाना है, कब विवाह करना है और किस तरह की जीवनशैली अपनानी है? डिजिटल युग ने युवा महिलाओं की इस स्वतंत्रता को नए सिरे से मजबूत किया है। इंटरनेट और सोशल मीडिया ने महिलाओं को जानकारी देने, उन्हें प्रेरित करने और आगे बढ़ने के कई नए अवसर प्रदान किए हैं। आज की युवा महिलाएं देश ही नहीं दुनिया को अपनी नजरों से देख सकती हैं, समझ सकती हैं और अपने संबंध में बेहतर विकल्प चुन सकती हैं। यह स्वतंत्रता केवल व्यक्तिगत नहीं है बल्कि सामाजिक परिवर्तन का संकेत भी है। इस बदलाव में परिवार की भूमिका भी कहीं न कहीं शामिल है। *

आज की युवा महिलाएं देश ही नहीं दुनिया को अपनी नजरों से देख सकती हैं, समझ सकती हैं और अपने संबंध में बेहतर विकल्प चुन सकती हैं। यह स्वतंत्रता केवल व्यक्तिगत नहीं है बल्कि सामाजिक परिवर्तन का संकेत भी है। इस बदलाव में परिवार की भूमिका भी कहीं न कहीं शामिल है। *

बदलती प्राथमिकताओं की नई तस्वीर

- ▶ भारत की महिलाओं की औद्योगिक विवाह आयु अब 20 से 22 वर्ष से बढ़कर 25 से 28 वर्ष हो चुकी है।
- ▶ उच्च शिक्षा में छात्राओं की भागीदारी अब 59 फीसदी तक पहुंच गई है।
- ▶ सिविल सेवा परीक्षा में उनकी सफलता की दर बढ़कर 30 से 35 प्रतिशत हो चुकी है।
- ▶ स्टार्टअप के इकोसिस्टम में भी अब महिलाएं अपनी हिस्सेदारी हासिल कर रही हैं। आज हजारों की तादद में युवा महिलाएं हैं, जिनके अब स्टार्टअप चल रहे हैं और उनकी यह संख्या लगातार बढ़ रही है।
- ▶ कॉर्पोरेट क्षेत्र में महिला कर्मचारियों की भागीदारी लगातार बढ़ रही है।
- ▶ डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से लाखों महिलाएं स्वरोजगार से भी जुड़ रही हैं। इस तरह अब नई पीढ़ी की महिलाएं आत्मनिर्भर हो नहीं बल्कि निर्णायक बन रही हैं।



बदल रही है सामाजिक मानसिकता



हमारी बेटियों को यह शानदार सफलताएं मिल रही हैं, तो इसमें समाज की सोच और उसके नजरिए में बदलाव का भी बड़ा योगदान है। पहले जहां बेटियों के लिए सीमित विकल्प होते थे, अब वे हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही हैं। छोटे शहरों से आने वाली युवा महिलाएं अब राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी प्रतिभा बिखेर रही हैं। डिजिटल शिक्षा, इंटरनेट, सोशल मीडिया ने भी इस परिवर्तन में बड़ी भूमिका निभाई है। इसलिए अब समाज के विभिन्न तबकों से उठकर आने वाली महिलाएं अपने आपको भावी रोल मॉडल में देख सकती हैं और उनसे प्रेरणा हासिल करी जा सकती है। हालांकि यह अलग बात है कि अभी महिलाओं ने अपने हिस्से की सारी जंग जीती नहीं है। अभी भी अनेक किस्म की चुनौतियां मौजूद हैं। लेकिन चुनौतियां तो हर क्षेत्र में हैं। असली बात यह है कि महिलाएं लगातार हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। हालांकि कुछ मां-बाप जिनकी वजह से महिलाओं की अभी भी पिछड़ी सोच है, उन्हें जल्द से जल्द अपने को बदलना होगा। नहीं तो वो लोग इन्हें अपने साख से खारिज कर देंगे, जिनकी नजरों में लड़का और लड़की बराबर है। आज के इस एआई दौर में एआई का विश्लेषण बताता है कि आने वाले भविष्य में लड़कियों की मौजूदगी और भी महत्वपूर्ण होगी। विशेषकर इस लिहाज से भी कि अब नई पीढ़ी में लड़कियां जाति और लिंग से परिभाषित नहीं होंगी। अपने काम और काम में हासिल महारत से सम्मान पा रही हैं।



कविता कुसुम अग्रवाल

एक सपना

मैंने देखा था इक सपना सपने में थी गोट-कार। स्टेयरिंग, सीट, सब कुछ उसमें, पर नहीं थे पहिए चार। मैंने सोचा, 'कैसे दौड़े? कैसे पकड़ेंगी रफ्तार?' एक जगह जो खड़ी रहे तो हो जाए बिल्कुल बेकार। ठंसेकर बोली गोटर गुड़से, जान गई दूँ गव की बात। पहिए तुम्हें जोड़ने लेंगे तब दौड़ेंगी दिन एक रात। परला पहिया साहस का रो, दूंगा ठो श्रालंधियेसा। तीसरा पहिया मेहनत वाला चौथा दूढ़ संकल्प-प्रायास। जब वे चारों संग जुड़ेंगे, राह सरत बन जाएगी। जीवब रूपी गाड़ी तब ही गंगिल तक पहुंचाएगी।

लघुकथाएं

सपनों की उड़ान

तुम्हारे जाने की टिकट बुक करवा दूँ? दिवेश का मैसेज आए आधे घंटे हो चुके थे, लेकिन रीमा को कोई जवाब सूझ नहीं रहा था। मन कुछ कह रहा था, दिमाग कुछ और!
थोड़ी देर में दिवेश का फोन आया, उसने पूछा, 'क्या हुआ तुमने कोई जवाब नहीं दिया?' 'क्या जवाब दूँ, समझ नहीं आ रहा मुझे।' रीमा बुझे स्वर में बोली।
'लिटरेचर का इतना बड़ा सेमिनार है, लेकिन तुम सबको छोड़कर हफ्ते भर के लिए बाहर जाना सही नहीं रहेगा। मेरा ध्यान यहीं लगा रहेगा।' इतना कह रीमा ने फोन रख दिया।
शाम को दिवेश दफ्तर से आए। सभी रूटीन के हिसाब से अपने-अपने काम में लगे थे। रीमा ने संतुष्टि भरी दृष्टि से सबको देखा, फिर वह भी अपने काम में लग गई।
थोड़ी देर बाद दिवेश रसोई में आए और रीमा के हाथों में एक पैकेट थमाते हुए बोले, 'सबका ध्यान रखना और सबसे प्यार करना अच्छी बात है, लेकिन थोड़ा अपने बारे में भी सोचना पाप नहीं। मैं तुम्हारे लिए अच्छी सी ड्रेस लेकर आया हूँ। तुम यही ड्रेस पहन कर अपने सेमिनार में जाना। मैंने तुम्हारे जाने का टिकट बुक कर दिया है।'

'लेकिन बच्चे...!' रीमा ने पूछा।
'हम लोग रह लेंगे मम्मा। बड़े हो गए हैं हम भी। पापा ने हमें सब बता दिया है।' पीछे से बच्चों की आवाज आई।
'हां बिल्कुल! आज मैं, कल को बच्चे अपने सेमिनार और दूसरे कामों से बाहर जाएंगे ही। फिर तुम क्यों सब कुछ छोड़ती रहो! बेझिझक जाओ।' दिवेश बोले।
रीमा का चेहरा खुशी से खिल उठा। अपने सपनों को पंख लगाते देख उसकी आंखें छलछला उठीं। *

-अलका 'सोनी'

घरेलू महिला

आशी को बस घरेलू काम आते हैं। देखो, इस कमरे को कैसा चमका रहा है! आशी का पति पवन अपने दोस्तों के साथ गपशप करते हुए बोला।
आशी इन दिनों एक परिचित के विवाह समारोह में शामिल होने शहर से बाहर गई हुई थी। पवन ने घर पर दोस्तों के साथ गपशप के बाद सबको विदा किया ही था कि आशी का फोन आया। वह पति से बोली, 'पवन, बस कुछ मिनटों का एक काम है। पूजा घर में एक हरी फाइल रखी है। उसे निकालकर देख लो और पॉलिसे की किशत जमा कर देना जरा।'
इतना कहकर और बाकी हाल-चाल पूछकर आशी ने फोन काट दिया।
पवन को झुंझलाहट हुई, अब तक पॉलिसे की रूपए आशी ही जमा करती रही थी। 'अजीब है यह आशी भी, इतना सा काम नहीं होता



शांति आधे घंटे

मिली है...जल्दी से रोटी खा ले, वरना ठेकेदार चिल्लाएगा।' बेला ने कहा।
'चिल्लाए तो... चिल्लाने दे। पहले मैं अपनी बेटी को दूध पिलाऊंगी...उसे भी तो भूख लग रही होगी।' शांति अपनी छह महीने की बच्ची को गोद में उठाते हुए बोली। कलेजे के टुकड़े को दूध पिलाकर लाइ लड़ाते-लड़ाते कब आधा घंटा बीत गया...शांति को पता ही नहीं चला।
'अरी शांति की बच्ची... चल उठ काम पर लग जा देखती नहीं पांच मिनट ऊपर हो गए हैं...!' ठेकेदार चिल्लाया।
बेला बीच में बोल पड़ी, 'ठेकेदार जी, अभी शांति ने रोटी नहीं खाई है बच्ची को दूध पिला रही थी बेचारी...!'

हार्दिक शुभकामनाएं!

'चल तू अपना काम कर... फालतू की पंचायत मत कर।'
ठेकेदार ने बेला को डांटा।
उसी समय एक सफेद चमचमाती कार आकर रुकी। उसमें से एक भद्र महिला बाहर निकली। ठेकेदार दौड़ता हुआ उसके पास पहुंचा। उन्हें एक गुलदस्ता देते हुए बोला, 'मैडम, महिला दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।' *

-गोविंद भारद्वाज

पुस्तक रचा / विज्ञान मूषण

स्त्री केंद्रित कहानियां

समाज के दमित, शोषित और वंचित वर्ग के साथ ही मुंशी प्रेमचंद ने स्वाधीनता से पहले स्त्रियों की सामाजिक दशा पर भी कई मर्मस्पर्शी कहानियां लिखी हैं। उनके द्वारा लिखी गई सोलह स्त्री केंद्रित कहानियों का संकलन हाल में पल्लव के संपादन में छपकर आया है। इन कहानियों से गुजरते हुए स्त्री जीवन की अलग-अलग छवियां प्रकट होती हैं। अपनी कहानियों में उन्होंने मुख्य तौर पर अन्याय, अनाचार और शोषण के विरुद्ध अपना स्वर बुलंद करने वाले स्त्री पात्रों को ही रचा है। फिर वो चाहे 'कुसुम' कहानी की मुख्य पात्र कुसुम ही, जो विवाह होने के बाद भी देहज के विरोध में आक्रोश प्रकट करते हुए दंपत्य के बंधन को तोड़कर स्वतंत्र रहने के लिए तैयार हो जाती है या 'सती' कहानी की विधवा मुलिया हो, जो अपनी अस्मिता पर कटुदृष्टि रखने वाले का पूरी दृढ़ता से प्रतिकार करती है। या फिर 'विध्वंस' कहानी की भुनगी, जो अपने परिश्रम का वाजिब मूल्य मांगने से नहीं झिझकती है। कह सकते हैं कि लगभग एक सदी पहले के संकीर्ण और परंपरावादी सोच से ग्रस्त भारतीय समाज में भी प्रेमचंद की कहानियां, स्त्री सशक्तिकरण की आवाज बुलंद करती हैं। *

पुस्तक: प्रेमचंद की स्त्री कथाएं, संपादन: पल्लव, मूल्य: 250 रूपए, प्रकाशक: राजपाल एंड संस, दिल्ली



पुस्तक: प्रेमचंद की स्त्री कथाएं, संपादन: पल्लव, मूल्य: 250 रूपए, प्रकाशक: राजपाल एंड संस, दिल्ली

-पूनम पांडे



गोवा की लोक-संस्कृति का रंगोत्सव शिवमो

सांस्कृतिक पर्व

वीरज बसाक

भारत के पश्चिमी तट पर स्थित गोवा, अपनी समृद्ध तटीय सुंदरता के कारण पर्यटकों के बीच जितना लोकप्रिय है, उतना ही अपने समृद्ध लोक संस्कृति के कारण भी यह प्रसिद्ध है। गोवा लोक संस्कृति का सबसे समृद्ध घर माना जाता है और इस समृद्ध लोक संस्कृति का सबसे जीवंत और रंगीन प्रतीक है शिवमो फेस्टिवल या शिवमो उत्सव। शिवमो उत्सव केवल एक वार्षिक पर्व भर नहीं है, बल्कि गोवा के ग्रामीण जीवन, लोक परंपराओं, लोक नृत्यों और ऐतिहासिक स्मृतियों का संवेदनशील और सामूहिक उत्सव भी है।

वसंत के आगमन का उत्सव

वास्तव में शिवमो, गोवा का पारंपरिक वसंत उत्सव है, जो होली से शुरू होकर चैत्र माह में एक पखवाड़े तक मनाया जाता है। इसलिए शिवमो उत्सव को गोवा की लोक आत्मा का उत्सव कहते हैं। क्योंकि इसमें यहां के किसान, मजदूर और ग्रामीण समुदायों की जीवनशैली, उनकी आस्था और उनकी ऐतिहासिक चेतना पूरी भव्यता के साथ अभिव्यक्त होती है। शिवमो का अर्थ है शिशिरोत्सव अर्थात् शीत ऋतु के अंत और वसंत के आगमन का उत्सव। यह पर्व प्राचीन काल से गोवा के कुछ समुदायों द्वारा मनाया जाता रहा है। फसल कटाई के बाद जब किसान अपनी मेहनत के फल से संतुष्ट होते हैं तो प्रकृति और देवताओं के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए शिवमो उत्सव मनाते हैं।

एक हजार साल पुराना उत्सव

इतिहासकारों के मुताबिक शिवमो उत्सव मनाने की परंपरा कम से कम 1000 साल पुरानी है। पुर्तगाली शासन के

दौरान भी गोवा के स्थानीय लोगों ने इस उत्सव को अपनी सांस्कृतिक पहचान के रूप में बनाए रखा। वास्तव में यह उत्सव गोवा के हिंदू समुदाय के लिए विशेष मायने रखता है। लेकिन इसकी लोक-रंगत और सांस्कृतिक आकर्षण के कारण आज इसमें सभी समुदायों की भागीदारी होती है।

कई लोकनृत्यों का आयोजन

शिवमो उत्सव की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें पारंपरिक लोकनृत्य और संगीत के भव्य आयोजन होते हैं। इन नृत्यों में गोवा के ग्रामीण जीवन, युद्ध कथाओं, पौराणिक प्रसंगों और सामाजिक घटनाओं को प्रस्तुत किया जाता है। शिवमो उत्सव में शामिल प्रमुख लोक नृत्यों में घोड़े मोदनी नृत्य सबसे प्रमुख है। वास्तव में यह योद्धाओं का नृत्य होता है। माना जाता है कि प्राचीनकाल में विजयी योद्धा, घोड़ों पर सवार होकर नृत्य किया करते थे। लेकिन आज लोक कलाकार घोड़े की मुखाकृति के मुखौटे पहनकर और हाथ में तलवार लेकर नृत्य करते हैं। यह नृत्य वास्तव में गोवा के गौरवमयी इतिहास का प्रतीक है। इस उत्सव का

दूसरा प्रमुख नृत्य है-रोमातामाल। यह सामूहिक नृत्य है, इसमें कलाकार ढोल, ताशा और झांझे की धुन पर नाचते हैं। इनके अलावा जो प्रमुख नृत्य इस उत्सव में खूब देखने को मिलते हैं, उसे फुगड़ी और जागर नृत्य कहते हैं। ये नृत्य गोवा के ग्रामीण और आदिवासी जीवन को दर्शाते हैं। इन प्रमुख नृत्यों के माध्यम से गोवा में लोग शिवमोत्सव में सच्चिंयों से चली आ रही अपनी सांस्कृतिक विरासत को जीवंत करते हैं।

विगत 5 मार्च से आरंभ हुआ गोवा का शिवमो उत्सव, आगामी 18 मार्च तक आयोजित होगा। यह गोवा की सांस्कृतिक पहचान है। यह उत्सव स्थानीय निवासियों की सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करता है और उन्हें अपनी परंपरा पर गर्व करने का अवसर भी देता है। इस उत्सव की कुछ प्रमुख विशेषताओं पर एक नजर।

निकलती हैं भव्य झांकियां

शिवमो उत्सव के दौरान गोवा के प्रमुख शहरों जैसे पणजी, मडगांव, वास्को, पोंडा और मापुसा में भव्य शोभा यात्राएं भी निकाली जाती हैं। इन शोभा यात्राओं में रंग-बिरंगी झांकियां होती हैं, जो पौराणिक कथाओं, ऐतिहासिक घटनाओं और सामाजिक विषयों को दर्शाती हैं। इन झांकियों में रामायण और महाभारत के दृश्य, गोवा के लोक देवताओं की कथाएं, पर्यावरण संरक्षण व सामाजिक जागरूकता के संदेश दिए जाते हैं। यह परंपरा आधुनिक, सामाजिक चेतना का अनूठा मिश्रण प्रस्तुत करती है।

ग्रामीण और शहरी शिवमो

ग्रामीण और शहरी शिवमो उत्सव जैसे एक-दूसरे से थोड़े भिन्न होते हैं, लेकिन ये दो रूप भले अलग हों, लेकिन उनकी आत्माएं एक होती हैं। इन दो अलग-अलग यानी शहरी और ग्रामीण शिवमो को क्रमशः धाकटो शिवमो यानी छोटा शिवमो और व्हाडलो शिवमो यानी बड़ा शिवमो कहा जाता है। छोटा शिवमो ग्रामीण क्षेत्रों में मनाया जाता है, जो ज्यादा पारंपरिक होता है और बड़ा शिवमो, शहरी क्षेत्रों में आयोजित होता है और इसमें बड़े पैमाने पर सांस्कृतिक झांकियां और शोभा यात्राएं निकाली जाती हैं। ग्रामीण शिवमो में ज्यादा पारंपरिक और धार्मिक तत्व शामिल होते हैं, जबकि शहरी शिवमो में पर्यटन और बहु-सांस्कृतिकता का प्रदर्शन अधिक होता है, क्योंकि शहरी शिवमो में बड़े पैमाने पर यहां आने वाले पर्यटक भी हिस्सा लेते हैं।

सांस्कृतिक-संरक्षण का माध्यम

शिवमो उत्सव केवल एक पारंपरिक लोक त्योहार भर नहीं बल्कि गोवा की सांस्कृतिक धड़कन है। शिवमो के रंग, संगीत और नृत्य गोवा के लोगों की आत्मा को अभिव्यक्त करते हैं। इसके जरिए पीढ़ियों से चली आ रही लोक परंपराओं को संरक्षण मिलता है। यह विभिन्न समुदायों के बीच एकता और सहयोग की भावना बढ़ाता है। यह महोत्सव युवा पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक संतुष्टि से जोड़ता है। आज के आधुनिक और वैश्विक युग में जब कई पारंपरिक उत्सव अपनी पहचान खो रहे हैं, तब शिवमो उत्सव गोवा की सांस्कृतिक निरंतरता का पर्याय बन गया है। *



आप क्यों रह जाते हैं अपने लक्ष्य से दूर

सेल्फ मोटिवेशन

शिखर चंद जैन

कई लोग प्लान बनाते हैं, लक्ष्य भी तय करते हैं, लेकिन उन्हें कभी अचीव ही नहीं कर पाते। हम सभी जानते हैं कि जीवन में सफलता की पहली सीढ़ी है- लक्ष्य का निर्धारण। लक्ष्य वह मार्गदर्शक है, जो हमें भीड़ में खोने से बचाता है और चुनौतियों से लड़ने का साहस देता है। किसी भी महान कार्य की शुरुआत एक छोटे से संकल्प से ही होती है, जो आगे चलकर एक स्पष्ट लक्ष्य का रूप ले लेता है।

सोचना पर्याप्त नहीं: 'मैं यह करना चाहता हूँ' ऐसा सोचकर लक्ष्य बनाना काफी नहीं है। स्पष्टता ही लक्ष्य की प्राप्ति में सफलता की पहली शर्त है। जब आप गहराई से समझ लेते हैं कि आप कौन हैं, आप वास्तव में क्या चाहते हैं और आपको कहां पहुंचना है, तभी आप एक सामान्य व्यक्ति की तुलना में दस गुना अधिक व तेज उपलब्धियां हासिल कर सकते हैं। लक्ष्य केवल एक मंजिल नहीं, बल्कि वह उत्तरदायित्व है, जो हमारे समय और ऊर्जा को सही दिशा देता है।

स्वयं का करें आकलन: स्वास्थ्य, आनंद, रिश्ते और वित्तीय स्वतंत्रता, ये जीवन के चार स्तंभ हैं, जिन्हें संतुलित करके आप असाधारण सफलता पा सकते हैं। जब आप इन चार क्षेत्रों में से हर एक में खुद को 1 से 10 अंक देकर ईमानदारी से आकलन करते हैं तो आपको तुरंत समझ आने लगता है कि आपके जीवन की सबसे ज्यादा समस्याएं किस क्षेत्र से जुड़ी हैं? जाहिर है, वहीं जहां आपका स्कोर कम होता है। यानी उसी बिंदु पर सबसे अधिक फोकस करने की जरूरत होती है।

अपना दृष्टिकोण तय करें: लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में आपकी मानसिकता दो तरह की हो सकती है, समृद्धि का दृष्टिकोण या अभाव का दृष्टिकोण। समृद्धि का दृष्टिकोण आपको आत्मनिष्ठासी, सकारात्मक और समाधान केंद्रित बनाता है। आप दुनिया को

क्या आप अपने जीवन में लक्ष्य निर्धारित करते हैं, लेकिन इसे प्राप्त नहीं कर पाते? ऐसे में यह जानना बहुत जरूरी है कि किन वजहों से आप अपने लक्ष्य से दूर रह जाते हैं और किन बातों का ध्यान रखकर अपने लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है, जानिए।

अवसरों से भरा मानते हैं और यह विश्वास रखते हैं कि जीवन में आगे बढ़ने का अच्छा समय है। आप में यह जागरूकता बनी रहती है कि दुनिया में चुनौतियां हमेशा थीं, हैं और रहेंगी। मगर आप अपनी ऊर्जा इस बात पर केंद्रित रखते हैं कि क्या बेहतर किया जा सकता है? यह सोच आपको चरनात्मक, सक्रिय और लक्ष्य उन्मुख बनाती है। वास्तव में लक्ष्य केवल एक मंजिल नहीं, बल्कि ऐसा उत्तरदायित्व है, जो हमारे समय और ऊर्जा को सही दिशा देता है। जब इंसान की आंखों में एक स्पष्ट स्वप्न और उसे पाने का दृढ़ निश्चय होता है, तो वह साधारण से असाधारण बनने का सफर शुरू कर देता है। इसके विपरीत दूसरा दृष्टिकोण आपको सीमित कर देता है। इसमें आप किस्मत के भरोसे बैठ जाते हैं और तरह-तरह के बहाने बनाते लगते हैं। इस दृष्टिकोण से कभी कुछ हासिल नहीं हो पाता है।

लक्ष्य पर शिहत से टिके रहें: अपने लक्ष्यों को हासिल करने के लिए यह जानना भी जरूरी है कि आप इन्हें क्यों हासिल करना चाहते हैं? अगर यह केवल सतही कारणों से या दूसरों की उम्मीद पर खरा उतरने के लिए है तो आप उसके प्रति गंभीर नहीं हो पाएंगे। इसकी बजाय स्पष्ट रूप से यह जानें कि इन लक्ष्यों का आपके आर्थिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, पारिवारिक या व्यक्तिगत जीवन पर क्या असर पड़ने वाला है? इससे आपको अपने लक्ष्य पर टिके रहने का हासिला मिलेगा।

मुश्किल लक्ष्यों को आसान बनाएं: अपने लक्ष्यों को सफल बनाने के लिए उन्हें स्पष्ट और छोटे हिस्सों में विभाजित कर लें। उन्हें प्रबंधनीय और ठोस कदमों में विभाजित करें। साथ ही अपने लक्ष्यों को निश्चित समय और प्राथमिकता दें। उन्हें अपने कैलेंडर में किसी महत्वपूर्ण बैठक की तरह रखें और तय समय पर उन्हें पूरा करने की कोशिश करें। हां, अपने संकल्पों के रास्ते में जरा लचीले भी रहें, क्योंकि जीवन में हमेशा उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। योजनाओं में आवश्यकता के अनुसार बदलाव करें। किसी गलती या असफलता पर झुंझलाने या हार मानने की बजाय खुद को माफ करें और आगे बढ़ें। अपनी प्रगति की समीक्षा भी करते रहें। *

पारिवारिक या व्यक्तिगत जीवन पर क्या असर पड़ने वाला है? इससे आपको अपने लक्ष्य पर टिके रहने का हासिला मिलेगा।

मुश्किल लक्ष्यों को आसान बनाएं: अपने लक्ष्यों को सफल बनाने के लिए उन्हें स्पष्ट और छोटे हिस्सों में विभाजित कर लें। उन्हें प्रबंधनीय और ठोस कदमों में विभाजित करें। साथ ही अपने लक्ष्यों को निश्चित समय और प्राथमिकता दें। उन्हें अपने कैलेंडर में किसी महत्वपूर्ण बैठक की तरह रखें और तय समय पर उन्हें पूरा करने की कोशिश करें। हां, अपने संकल्पों के रास्ते में जरा लचीले भी रहें, क्योंकि जीवन में हमेशा उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। योजनाओं में आवश्यकता के अनुसार बदलाव करें। किसी गलती या असफलता पर झुंझलाने या हार मानने की बजाय खुद को माफ करें और आगे बढ़ें। अपनी प्रगति की समीक्षा भी करते रहें। *

मुश्किल लक्ष्यों को आसान बनाएं: अपने लक्ष्यों को सफल बनाने के लिए उन्हें स्पष्ट और छोटे हिस्सों में विभाजित कर लें। उन्हें प्रबंधनीय और ठोस कदमों में विभाजित करें। साथ ही अपने लक्ष्यों को निश्चित समय और प्राथमिकता दें। उन्हें अपने कैलेंडर में किसी महत्वपूर्ण बैठक की तरह रखें और तय समय पर उन्हें पूरा करने की कोशिश करें। हां, अपने संकल्पों के रास्ते में जरा लचीले भी रहें, क्योंकि जीवन में हमेशा उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। योजनाओं में आवश्यकता के अनुसार बदलाव करें। किसी गलती या असफलता पर झुंझलाने या हार मानने की बजाय खुद को माफ करें और आगे बढ़ें। अपनी प्रगति की समीक्षा भी करते रहें। *



समझ लें सटीक फॉर्मूला

आपके लक्ष्य छोटे हो या बड़े, उनमें सफलता जरूर मिलेगी अगर आप अपने लक्ष्य को निर्धारित करने और उसे पाने का सही फॉर्मूला जान लें। इसके लिए कुछ बातों को समझ लें।

लक्ष्य की कोई डेडलाइन न हो तो वह सिर्फ एक कल्पना या सपना मात्र बनकर रह जाता है। इसलिए हर लक्ष्य का एक समय सीमा तय करें। लक्ष्य और समय सीमा तय हो जाए तो वह आपका उद्देश्य बन जाता है। इसे पूरा करने की योजना बनाएं। लक्ष्य पाने के लिए आपको निरंतरता का भी ध्यान रखना होगा। यानी आपको नियमित रूप से अपने लक्ष्य को हासिल करने में जुटा रहना पड़ेगा।

जानकारी

अंजू जैन

आजादी के बाद, भारत में तेजी से विकसित हो रहे सरकारी औद्योगिक उपकरणों को सुरक्षा प्रदान करने की आवश्यकता थी, जो देश की अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण थे। इसके लिए एक मजबूत सुरक्षाबल की जरूरत महसूस की गई। इसी जरूरत को ध्यान में रखते हुए 10 मार्च 1969 को केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल यानी सीआईएसएफ (सेंट्रल इंडस्ट्रियल सिक्योरिटी फोर्स) की स्थापना की गई। भारत की संसद के एक अधिनियम द्वारा इसका गठन किया गया, जो केंद्रीय गृह मंत्रालय के अंतर्गत काम करता है। इस सुरक्षा बल का ध्येय वाक्य है-संरक्षण और सुरक्षा।

प्रमुख कार्य

अपने नाम के मुताबिक ही सीआईएसएफ का प्रमुख आरंभिक कार्य औद्योगिक सुरक्षा ही था। सरकारी कारखानों, परमाणु ऊर्जा संयंत्रों और बिजली संयंत्रों की सुरक्षा का जिम्मा इस बल को दिया गया। बाद में समय-समय पर इसकी जिम्मेदारियां बढ़ती गईं। आगे चलकर यह अर्धसैन्यबल हवाई अड्डों, बंदरगाहों और मेट्रो की सुरक्षा कार्य भी करने लगा। इस बल के जवान देश की ऐतिहासिक इमारतों, स्मारकों और धरोहरों जैसे-लाल किला, ताजमहल आदि की रक्षा भी करते हैं। वीआईपी सुरक्षा के तहत विशिष्ट व्यक्तियों को सुरक्षा प्रदान करना भी इनकी जिम्मेदारी में शामिल है।

बढ़ता संख्या बल

जब 1969 में सीआईएसएफ की शुरुआत हुई थी, तब इसमें सिर्फ 2,800 जवान थे। आज यह दुनिया के सबसे बड़े सुरक्षा बलों में से एक है, जिसमें 2,00,000 (दो लाख) से भी ज्यादा जवान शामिल हैं।

आग बुझाने में भी माहिर

सीआईएसएफ के पास अपना एक खास 'फायर विंग' भी है। यह भारत का अकेला ऐसा सुरक्षा बल है, जिसके पास फैंकट्रियों और उद्योगों में आग बुझाने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित टीम होती है।

महिलाएं भी नहीं हैं पीछे

देश के अन्य सुरक्षा बलों पुलिस, पीएसबी, बीएसएफ और सशस्त्र सैन्य (थल सेना, वायु सेना और नौसेना) बलों की तरह ही सीआईएसएफ में भी महिलाएं अपनी सेवाएं दे रही हैं। वर्तमान में इस अर्धसैन्य बल में लगभग साढ़े बारह हजार यानी आठ प्रतिशत महिलाएं तैनात हैं। सरकार का लक्ष्य जल्द ही इनकी संख्या बढ़ाकर दस प्रतिशत करने का है। मुख्य तौर पर महिलाएं एचएएसएफ, तिवक रिजर्वेशन टीम और सीआईएसएफ कमांडो टीम में शामिल होकर अपनी सेवाएं दे रही हैं। किसी भी अन्य सेंट्रल आर्म्ड पुलिस फोर्स की तुलना में सीआईएसएफ में सबसे अधिक महिलाएं कार्यरत हैं।

आगामी 10 मार्च को सीआईएसएफ का 57वां स्थापना दिवस मनाया जाएगा। देश की महत्वपूर्ण धरोहरों और औद्योगिक प्रतिष्ठानों की सुरक्षा में तैनात केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) के योगदान और भूमिका पर एक नजर।

धरोहरों-औद्योगिक प्रतिष्ठानों का रक्षक सीआईएसएफ



स्मार्ट डॉग स्ववाद

सीआईएसएफ के पास बहुत ही स्मार्ट डॉग्स की तेजतर्रार स्ववाद भी है। इनके डॉग्स इतने टूट होते हैं कि वे छिपी हुई खतरनाक चीजों का पलक झपकते ही पता लगा लेते हैं। कई बार सीआईएसएफ के डॉग स्ववाद ने शांति किस्म की साजिशों का भंडाफोड़ किया है।

एयरपोर्ट सुरक्षा में संलग्न

देश के तमाम एयरपोर्ट्स पर केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल को उनकी विशिष्ट विशेषज्ञता, उन्नत तकनीक के कारण तैनात किया गया है। वे हवाई अड्डों की सुरक्षा के विशेषज्ञ माने जाते हैं, जो यात्रियों की तलाशी, सामान की स्क्रीनिंग और आतंकवाद विरोधी अभियानों में उच्च दक्षता



प्रदान करते हैं। इन सैनिकों को विशेष रूप से नागरिक हवाई अड्डों की सुरक्षा के लिए प्रशिक्षित किया जाता है, जो सामान्य पुलिस या दूसरे अर्धसैनिक बलों के प्रशिक्षण से अलग होती है। सन् 1999 में इंडियन एयरलाइंस की फ्लाइट आईसी-814 के अपहरण के बाद, भारत सरकार ने सुरक्षा मजबूत करने के लिए हवाई अड्डों की सुरक्षा सीआईएसएफ को सौंपने का निर्णय लिया। इसकी शुरुआत फरवरी 2000 में जयपुर हवाई अड्डे से की गई। ये अर्धसैनिक, आधुनिक उपकरणों का उपयोग करके यात्रियों की गहन तलाशी और हैंड बैगेज की जांच सुनिश्चित करते हैं, जो एयरपोर्ट सुरक्षा के लिए अनिवार्य है। ये अंतरराष्ट्रीय विमानन सुरक्षा मानदंडों का पालन करते हैं, जो अन्य सुरक्षा बलों की तुलना में अधिक उपयुक्त हैं। साथ ही इस बल के जवान संभावित खतरों के लिए 24x7 निगरानी करते हैं और त्वरित प्रतिक्रिया टीम के साथ किसी भी आपात स्थिति से निपटने में सक्षम होते हैं। ये एयरपोर्ट के संवेदनशील क्षेत्रों में असाधारण तत्वों को पकड़ने और किसी भी प्रकार की तस्करी को रोकने में भी माहिर होते हैं। वर्तमान में 70 से अधिक एयरपोर्ट्स पर सीआईएसएफ के जवानों की तैनाती है। यद्यपि अब देश के लगभग 60 हवाई अड्डों पर गैर-प्रमुख इयूटी के लिए निजी सुरक्षा गार्ड्स भी लगाए जा रहे हैं, लेकिन प्रमुख सुरक्षा और स्क्रीनिंग का काम अभी भी मुख्य रूप से सीआईएसएफ ही करती है। *

सिने ट्रेड

अशोक जोशी

हिंदी सिनेमा की विकास यात्रा में स्त्रियों का उल्लेखनीय योगदान रहा। जिन दिनों सिनेमा की शुरुआत हो रही थी, उसमें महिलाओं का काम करना अपेक्षाकृत रूप से प्रतिबंधित माना जाता था। तब पुरुष कलाकार ही नारी का स्वांग भर पड़े पर नजर आया करते थे। लेकिन कुछ समय बाद पढ़े पर नायिकाओं के पर्दापण से अब तक स्त्री कलाकार, सिनेमा का सबसे अनिवार्य हिस्सा बन गई हैं। फिल्मों में समय-समय पर नारी जीवन से जुड़ी समस्याएं, संघर्ष और उनके सशक्तिकरण जैसे विषयों को गंभीरता से प्रदर्शित किया जाता रहा है।

बेमेल विवाह की समस्या: हिंदी सिनेमा में वी. शांताराम, नारी समस्याओं को पढ़े पर सशक्त तरीके से उठाने वाले फिल्मकार थे। उनकी 1937 में प्रदर्शित फिल्म 'दुनिया न माने' बेमेल विवाह की समस्या पर केंद्रित थी। यह फिल्म स्त्रीत्व की गरिमा को बेहद खूबसूरती से उभारती है। शांता आटे ने नायिका नारी की भूमिका में प्राण फूंक दिए थे। नारी को भोग्या, चरणों की दासी और वस्तु मानने वाली को यह फिल्म प्रभावी सबक सिखाती है।

जातिगत विषंगतियों पर कटाक्ष: 1936 में प्रदर्शित फिल्म 'अच्छत कन्या' सवर्ण लड़के और अछूत लड़की की एक दारुण प्रेम कहानी है। यह एक दुःखीत फिल्म है। इस वर्जित और उपेक्षित विषय को पहली बार फिल्म के माध्यम से लोगों के बीच लाने का साहसिक प्रयास किया गया था। इससे मिलते-जुलते विषय पर 1959 में विमल राय ने 'सुजाता' बनाई, जो फिर से अछूत युवती और सवर्ण युवक के प्रेम की कहानी है। विमल राय की यह फिल्म आजादी के बाद इस विषय पर बनाई गई पहली फिल्म थी। इस फिल्म के एक दृश्य में रवींद्रनाथ ठाकुर जगत नाटक 'चांडालिका' का मंचन किया जाता है। इस नाटक में भगवान बुद्ध अछूत स्त्री के हाथों से पानी पीते हैं और सभी जातियों को समानता को व्याख्यायित करते हैं। राजकपूर और मीना कुमारी की खवाजा अब्बास निर्देशित फिल्म 'चार दिल चार राहें' की कहानी भी ऐसे ही विषय के इर्द-गिर्द घूमती है। इसी क्रम में श्याम बेनेगल की फिल्म 'अंकुर', 'भुवन शोम', 'मृगया', 'भूमिका', 'मंडी', 'चक्र' आदि में हाशिए पर धकेल दी गई स्त्रियों की सामाजिक स्थिति की दर्दमय झांकी प्रस्तुत की गई हैं।

दिखे स्त्री संघर्ष के विविध रूप: हिंदी फिल्मकारों ने भारतीय स्त्री के सभी रूपों को

स्त्रियों के संघर्ष और उसके सशक्तिकरण को शुरुआती दौर से ही हिंदी फिल्मों का विषय बनाया जाता रहा है। आज महिला दिवस के अवसर पर हम आपको कुछ ऐसी फिल्मों के बारे में बता रहे हैं, जिनमें स्त्री संघर्ष और उसके सशक्तिकरण को प्रमुखता से उभारा गया है।

फिल्मों में खूब दिखीं महिला संघर्ष-शक्ति की कहानियां



जैसी फिल्मों में जहां नारी के संघर्ष की अलग-अलग दस्तानें दिखती हैं, वहीं 'प्रेमरोग' में आभिजात्य परिवार की विधवा युवती का विवाह सामान्य वर्ग के युवक से करावाकर सामाजिक विषमता को मिटाने की पहल की गई।



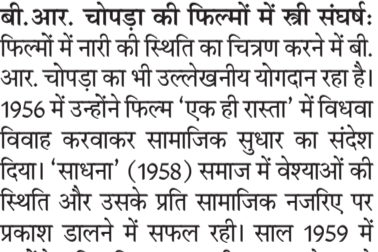
जैसे फिल्मों में जहां नारी के संघर्ष की अलग-अलग दस्तानें दिखती हैं, वहीं 'प्रेमरोग' में आभिजात्य परिवार की विधवा युवती का विवाह सामान्य वर्ग के युवक से करावाकर सामाजिक विषमता को मिटाने की पहल की गई।



जैसे फिल्मों में जहां नारी के संघर्ष की अलग-अलग दस्तानें दिखती हैं, वहीं 'प्रेमरोग' में आभिजात्य परिवार की विधवा युवती का विवाह सामान्य वर्ग के युवक से करावाकर सामाजिक विषमता को मिटाने की पहल की गई।



जैसे फिल्मों में जहां नारी के संघर्ष की अलग-अलग दस्तानें दिखती हैं, वहीं 'प्रेमरोग' में आभिजात्य परिवार की विधवा युवती का विवाह सामान्य वर्ग के युवक से करावाकर सामाजिक विषमता को मिटाने की पहल की गई।



जैसे फिल्मों में जहां नारी के संघर्ष की अलग-अलग दस्तानें दिखती हैं, वहीं 'प्रेमरोग' में आभिजात्य परिवार की विधवा युवती का विवाह सामान्य वर्ग के युवक से करावाकर सामाजिक विषमता को मिटाने की पहल की गई।



जैसे फिल्मों में जहां नारी के संघर्ष की अलग-अलग दस्तानें दिखती हैं, वहीं 'प्रेमरोग' में आभिजात्य परिवार की विधवा युवती का विवाह सामान्य वर्ग के युवक से करावाकर सामाजिक विषमता को मिटाने की पहल की गई।

जैसे फिल्मों में जहां नारी के संघर्ष की अलग-अलग दस्तानें दिखती हैं, वहीं 'प्रेमरोग' में आभिजात्य परिवार की विधवा युवती का विवाह सामान्य वर्ग के युवक से करावाकर सामाजिक विषमता को मिटाने की पहल की गई।